चन्दामामा
मार्च १९९६
Rs 5

CHANDAMAMA

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक

हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर **4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-)** लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	4/- (छूट)	48.00
12	7/- (डाक व्यय)	84.00
1	48/- (13वीं वी.पी. फ्री)	48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री		20.00
		200.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और **सदस्यता शुल्क के 10 रु.** डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड ______

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म दिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

चन्दामामा

मार्च १९९६

संपादकीय ...७
समाचार-विशेषताएँ ...९
अलौकिक लोकज्ञान ...१०
नित्यानंद की ईमानदारी ...१६
रूपधर की यात्राएँ - ८ ...१७
पड़ोसियों की सहायता ...२४
स्वप्न-सुँदरी ...२५
योगी की सलाह ...३१
समुद्रतट की सैर - ४ ...३३
कमीज़ हज़ार रुपयों की ...३७
युद्ध नहीं ...४२
महाभारत - १९ ...४५
बालक समाचारों में ...५२
'चन्दामामा' परिशिष्ट - ८८ ...५३
सास भी अच्छी बहू भी अच्छी ...५६
नटखट पिशाचिनियाँ ...६१
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता ...६६

एक प्रति : ५.००

वार्षिक चन्दा : ६०.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

परीक्षाएँ

बहुत समय से, देश के अनेकों भागों में वार्षिक परीक्षाएँ मार्च महीने के तीसरे अथवा चौथे हफ़्ते में हो रही हैं। अब भी मार्च महीने में होनेवाली इन अंतिम परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी सिर्फ एक हफ़्ते के पहले ही से तैयारी में लग जाते हैं। वे सभी विषयों में उत्तीर्ण होने के लिए श्रद्धा से पढ़ने लगते हैं। किन्तु ऐसा क्यों हो? उन्हें अध्ययन के लिए साधारणतया परीक्षाओं के पहले पंद्रह दिनों की छुट्टियाँ दी जाती हैं। यह अवधि पर्याप्त है और इस अवधि में आठ-दस विषयों की तैयारी हो सकती है।

असल में इसके लिए चाहिये आवश्यक योजना, जिससे विषयों को पुन: पढ़ा जा सके, मनन किया जा सके। परीक्षाएँ लिखनेवालों को ये विषय कोई नये नहीं हैं। इन विषयों को वे अपनी कक्षाओं में साल भर सुन चुके हैं। केवल उन्हें फिर से अपने पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ना होगा और मुख्य बातों को पचाना होगा। जिन्हें उन्होंने सीखा था, उसे याद करना होगा।

अगर वे उस साल परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाये तो इसके लिए दूसरों को दोषी ठहराना गलत है। दोषी तो वे स्वयं हैं। अगर वे परीक्षाओं की तैयारी पहले से करते तो वे इस स्थिति से बच पाते। विद्यार्थियों को चाहिये कि जैसे-जैसे पाठ्यक्रम के विषय समाप्त होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे वे उन विषयों का अच्छी तरह मनन करें। मुख्यांशों को नोट कर लें, जिससे अंतिम परीक्षाओं के समय उन्हें कोई कठिनाई ना हो।

अपनी अंतिम परीक्षाएँ लिखनेवाले विद्यार्थियों को हमारी शुभ कामनाएँ।

वर्ष : ४९ मार्च १९९६ अंक : ७

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-
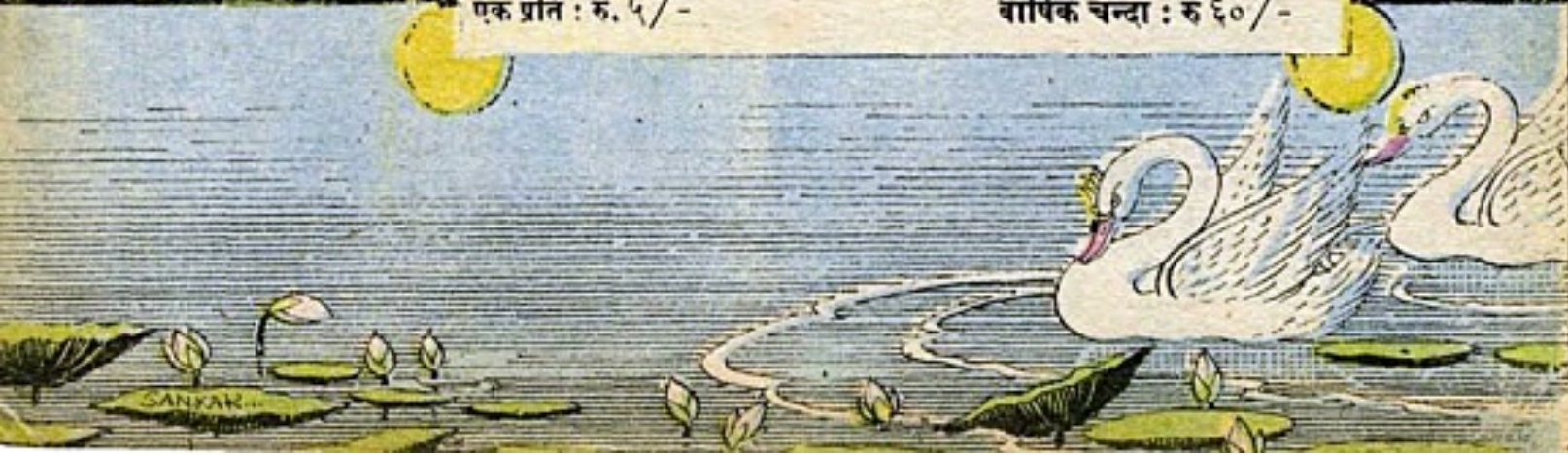
Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. Place of Publication	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
2. Periodicity of Publication	MONTHLY Ist of each calender month
3. Printer's Name	B.V. REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Prasad Process Private Limited 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
4. Publisher's Name	B.VISWANATHA REDDI
* *Nationality*	INDIAN
Address	Chandamama Publications 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
5. Editor's Name	B.NAGI REDDI
Nationality	INDIAN
Address	'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
6. Name and Address of individuals who own the paper	CHANDAMAMA PUBLICATIONS PARTNERS: 1. Sri B. VENKATRAMA REDDY 2. Sri B.V. NARESH REDDY 3. Sri B.V. SANJAY REDDY 4. Sri B.V. SHARATH REDDY 5. Smt. B. PADMAVATHI 6. Sri B.N. RAJESH REDDY 7. Smt. B. VASUNDHARA 8. Kum. B.L. ARCHANA 9. Kum. B.L. ARADHANA 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026

I, B Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

1st March 1996

समाचार - विशेषताएँ

पाबंदियाँ हटायी गयीं

द्वितीय विश्व-युद्ध (१९३९-४५) की समाप्ति के बाद लगभग तीस सालों तक वियतनाम में हिंसा-कांड चलता रहा। होचिमिन के नेतृत्व में स्वतंत्र शक्तियाँ फ्रेंच सैनिकों को भगाने के लिए आठ सालों तक लड़ती रहीं। फ्रेंच सैनिकों के चले जाने के बाद १९५४ में जेनेवा समावेश में जो समझौता हुआ, उसके अनुसार वियतनाम दो देशों में बँट गया। एक का नाम था कम्यूनिस्ट उत्तर वियतनाम, दूसरा था दक्षिण वियतनाम।

फिर भी संघर्ष ज़ारी रहे। दक्षिण वियतनाम के कम्यूनिस्ट गोरिल्ला, उत्तर वियतनाम के सैनिकों की सहायता से दक्षिण वियतनाम की सेना से लड़ने-भिडने लगे। अमेरीका ने दक्षिण वियतनाम को सहायता पहुँचायी। १९५९-६९ के मध्य-काल में वियतनाम के युद्ध के लिए लगभग ५,५०,००० सैनिक अमेरिका ने भेजे। हज़ारों अमेरीकी सैनिक इस युद्ध में मारे गये। अमेरीका में आँदोलन छिड़ा कि अमेरीकी सैनिकों को वियतनाम भेजना नहीं चाहिये। १९७२ में कम्यूनिस्टों ने क़रारी चोट पहुँचायी, जिससे अमेरिका ने अपने सैनिकों को वहाँ से हटाया। फिर भी इंडो-चीन द्वीप-कल्प में लड़ाई के बंद होने में दो और साल लगे।

वियतनाम में हुए अपने अपमान को अमेरीका भुला नहीं सका। इस कारण दोनों देशों में क़रीबन बीस सालों तक शतृता बनी रही। १९९२ में अमेरीकी अध्यक्ष जार्ज बुष ने कुछ हद तक पाबंदियाँ हटायीं। इससे, तदनंतर बने अमेरीकी अध्यक्ष बिल क्लिंटन को १९९४ में इन पाबंदियों को पूर्ण रूप से हटाने में नैतिक बल प्राप्त हुआ। एक वर्ष के बाद अमेरीका ने वियतनाम के साथ दौत्य संबंध स्थापित करने की दिशा में क़दम उठाये। अब्रहाम लिंकन की विचार-शैली के अनुसार यह कहते हुए बिल क्लिंटन ने अपना स्नेह-हस्त बढ़ाया "घावों को भरने के बाद, सत्संबंधों को समृद्ध करने का सही समय आसन्न हुआ।"

संतोषजनक इन परिणामों से अमेरीका व वियतनाम के स्नेह-संबंधों में और वृद्धि हुई, दृढ़ हुई। आशा करें कि ये संबंध बने रहेंगे।

अलौकिक लोकज्ञान

पंडित विश्वनाथ की ख्याति देश भर में व्याप्त हुई। जगपति नामक एक युवक, उनका शिष्य बनने बहुत ही दूर से उनके यहाँ आया।

पंडित विश्वनाथ ने उसका स्वागत किया और कहा "मेरे सब विद्यार्थी अध्ययन में व्यस्त हैं। तुम्हें कुछ समय तक मेरे यहाँ रहना होगा, मेरे साथ-साथ भ्रमण करना होगा और मेरे कहे अनुसार करना होगा। इसके बाद अध्ययन का आरंभ कर सकते हो।"

जगपति ने उस समय 'हाँ' तो कह दिया, पर शाम को एक पुराने शिष्य से मिला और उससे कहा "मैंने सोचा कि पंडित विश्वनाथ भले आदमी हैं। पर वो तो मुझे सेवक बनाकर रखना चाहते हैं, मुझसे अपनी सेवाएँ कराना चाहते हैं। क्या पहले तुम्हारे साथ भी ऐसा ही हुआ ?"

पुराने शिष्य ने कहा "उनके साथ घूमना महाभाग्य है। अध्ययन से जो लोकज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता, वह उनके साथ घूमते हुए हो जाता है। लोकज्ञान रहित पांडित्य सुगंध रहित पुष्प के समान है। एक बार उनके साथ-साथ घूमोगे, तो अध्ययन की ओर तुम्हारी दृष्टि जायेगी ही नहीं।"

जगपति का विश्वास था कि उसे अपार लोकज्ञान है। उसे लगा कि लोकज्ञान के लिए ही अगर पंडित के साथ घूमना है तो वह व्यर्थ है। उसकी समझ में नहीं आया कि यह बात पंडित को कैसे बतायी जाए? सोने के पहले वह पंडित से मिला और कहा "महाशय, मेरे गाँव का हर कोई मेरे लोकज्ञान का प्रशंसक है। मेरे आपके यहाँ आने का उद्देश्य है कि इस लोकज्ञान के साथ पांडित्य को जोडूँ। आपसे प्रार्थना है कि मेरी इच्छा पर आप ध्यान दें।"

पंडित विश्वनाथ ने मुस्कुरा दिया और चुप रहे। दूसरे दिन प्रातकाल स्नान आदि के बाद

कमलकांत

पंडित ने जगपति को बुलाया और कहा "चलो, चलते हैं। अभी-अभी निद्रा से जागी प्रकृति को देखना है। वह कैसी लग रही है, लिख लेना है। उसकी व्याख्या करनी है। इस विषय को लेकर महाकवियों ने क्या रचा है उसका परिशीलन करना है। कवि और कवि की अभिव्यक्ति के अंतर का अध्ययन करना है। यही लोकज्ञान है। चलो, अब चलते हैं।"

जगपति ने गुरु को सविनय नमस्कार करते हुए कहा "महोदय, सुंदर स्त्री के मुख की तुलना कविगण, चंद्रबिम्ब के साथ करते हैं। किन्तु स्त्री कितनी ही समीप हो, सुंदर ही दीखती है। चंद्रमा भी भूमि की ही तरह एक ग्रह है किन्तु उसे नज़दीक से देखने से बहुत ही भद्दा लगता है। पूरा ऊबड़-खाबड़ दिखता है। वह कल्पना है तो यह वास्तविकता है।"

पंडित विश्वनाथ ने कहा "तुम्हें तो बहुत कुछ मालूम है, चलो, अब चलते हैं।"

यद्यपि गुरु ने उसकी प्रशंसा की, फिर भी उसे अध्ययन करने को नहीं कहा, इसपर जगपति को क्रोध था। उनके साथ-साथ चलना उसके लिए अनिवार्य हो गया।

राह में उनकी भेंट पहले पहल महाकवि महादेव से हुई। वे नदी में स्नान करने जा रहे थे। पंडित विश्वनाथ को देखते ही रुक गया और प्रणाम किया। कहा "आर्य, आज आप

हमारे यहाँ भोजन करने पधारिये।"

पंडित ने पूछा "ऐसी कौन-सी विशेषता है ?" "मेरे ससुराल से एक रसोइया आया हुआ है। कल ही उसे जाना था। किन्तु उसके पकवानों का मज़ा चखने के लिए मैंने एक और दिन उसे रुकने को कहा। आप 'ना' न कहें। अवश्य पधारियेगा।"

"आजकल मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है। कम से कम एक और हफ़्ते तक मुझे इन पकवानों से दूर रहना होगा।" विश्वनाथ ने कहा।

"रसोइये को एक और हफ़्ते के लिए रोक लेता, परंतु कल मुझे एक यात्रा पर जाना है। नकुलपुर के नरेंद्र को एक काव्य समर्पित
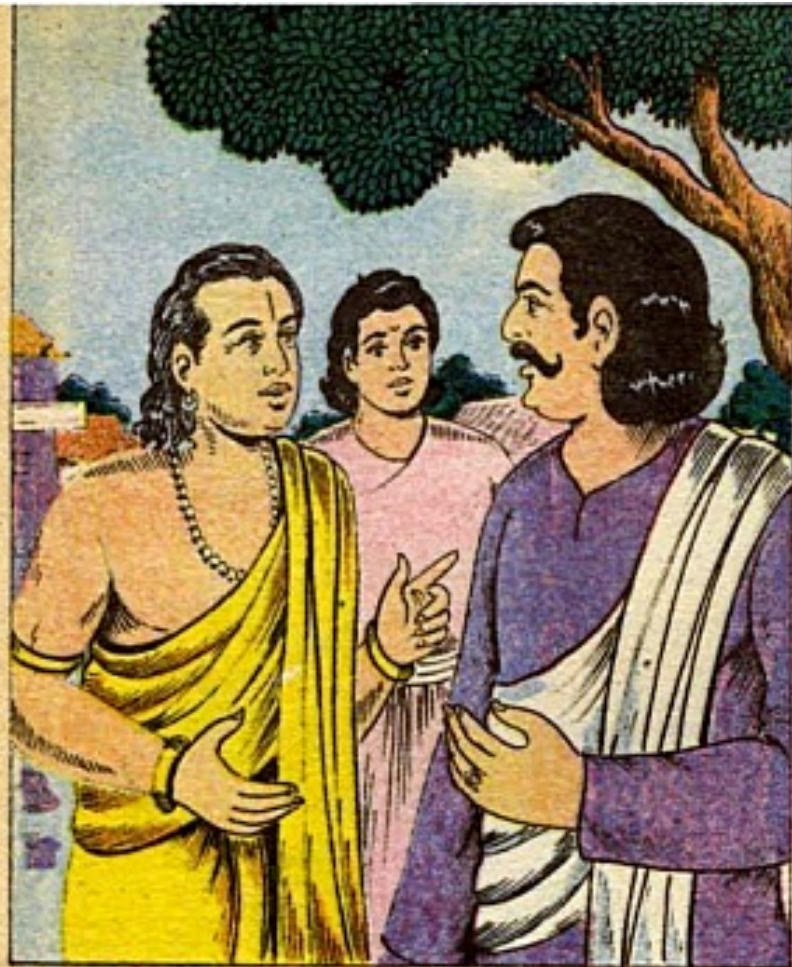
करना है।" महाकवि महादेव ने कहा।

पंडित ने प्रश्न किया "सुना है कि उस काव्य में कुछ त्रुटियाँ रह गयीं हैं।"

महादेव ने कहा "उन त्रुटियों को सुधारने के लिए ही मैंने आपकी सहायता माँगी, किन्तु आपने अपनी असहमति जतायी।"

"काव्य में त्रुटियाँ सुधारनी हों तो ज़रूरी है कि उसे ध्यान से पढ़ा जाए। इसके लिए कम से कम एक हफ़्ते की अवधि चाहिये। इस अवधि तक तुम प्रतीक्षा नहीं कर सकते क्योंकि इतना समय तुम्हारे पास नहीं है।" पंडित ने कहा।

"सब मेरा दुर्भाग्य है" कहकर महादेव चला गया। तब पंडित ने जगपति से कहा "मेरा स्वास्थ्य तो बिलकुल ठीक है। भोजन से बचने के लिए ही मैंने झूठ कहा।"

यह सुनकर जगपति के मन में अनेकों संदेह जगे। उससे चुप नहीं रहा गया। पर करता क्या? चुप ही रहा और थोड़ी दूर जाने के बाद उनकी मुलाक़ात धनी किसान भूषण से गाँव में हुई। उसका खेती-बारी के साथ-साथ शहर में व्यापार भी है। उसने पंडित को प्रणाम करके कहा "आज आप मेरे यहाँ भोजन करेंगे। इनकार मत कीजियेगा। सब इंतज़ाम हो गया।"

पंडित ने पूछा "आज क्या विशेष बात है?"

भूषण ने कहा "आज ही से मेरे बेटे का अर्थशास्त्र-पठन शुरु हो रहा है।" "जो भी हो, पढ़ाई में भी तुमने व्यापार को ही प्रधानता दी। अपने लड़के को अर्थशास्त्र में निपुण बनाने की ठान ली है।" पंडित ने हँसते हुए कहा।

"जी हाँ, सब लोग कविताएँ ही पढ़ने लग जाएँ तो व्यापार बंद नहीं हो जायेगा? बिना किसी नुक़सान के प्रजा की सेवा करने के लिए अर्थशास्त्र का ज्ञान आवश्यक है। आप तो समस्त शास्त्रों में निपुण हैं। पर, मैंने अपने बेटे को अर्थशास्त्र पढ़ाने के लिए कहा तो आपने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। शहर से पंडित को बुलाना पड़ा। आप बताएँ कि वह कितना प्रतिभावान है तो अच्छा होगा।" भूषण ने कहा।

"आज ज़रूर आता, लेकिन कहीं और आने का वादा कर चुका हूँ। वादे से मुकरना व्यापारी के लिए शायद ठीक हो, पर पंडित के लिए नहीं।" कहते हुए पंडित आगे बढ़ गये।

थोड़ी दूर और जाने के बाद उन्होंने जगपति से कहा "मैंने किसी और से वादा थोड़े ही किया था। भूषण से झूठ कह दिया।"

जगपति चुप रहा, पर मन ही मन उसे दुख हो रहा था कि उसका गुरु अव्वल दर्जे का झूठा है।

रास्ते में पड़ोस के गाँव का रामचंद्र दिखायी पड़ा। वह रत्नों का व्यापारी है। उसने भी पंडित को नमस्कार किया और कहा "आपही के लिए गाड़ी ले आया हूँ। आपको मेरे गाँव आना होगा। मेरा स्वागत-सत्कार स्वीकार करना होगा। मेरे यहाँ भोजन करना होगा।"

पंडित ने पूछा "कोई ख़ास बात ?"

"हर महीने दशमी के दिन एक विशिष्ट व्यक्ति का सत्कार करना हमारे घर की रीति है। हमारे देश के राजा ने मेरे इस गुण के लिए मुझे बधाई भी दी और 'सम्मान सुधाकर' की उपाधि दी। इस बार आपका सम्मान करने का निश्चय कर चुका हूँ। हमारे देश में जहाँ तक पांडित्य का सवाल है, आपकी बराबरी का कोई है ही नहीं।" रामचंद्र ने कहा।

पंडित ने मुस्कुराकर कहा "मेरा दूर का एक रिश्तेदार मर गया है। इस महीने में कोई सम्मान स्वीकार नहीं करना चाहिये। किसी

उत्सव में भाग नहीं लेना चाहिये। इसलिए मुझे माफ़ कर दीजिये। मैं नहीं आ सकता।''

''यह सब मेरा दुर्भाग्य है। मैं यह सोचकर यहाँ आया कि आप यहाँ हैं। पड़ोस के गाँव में शतरंज का खिलाड़ी है, उसे ले जाने की कोशिश करूँगा।'' कहकर वह चला गया।

रामचंद्र के चले जाते ही पंडित ने शिष्य से कहा ''घबराना मत। मेरे दूर का कोई रिश्तेदार नहीं मरा।''
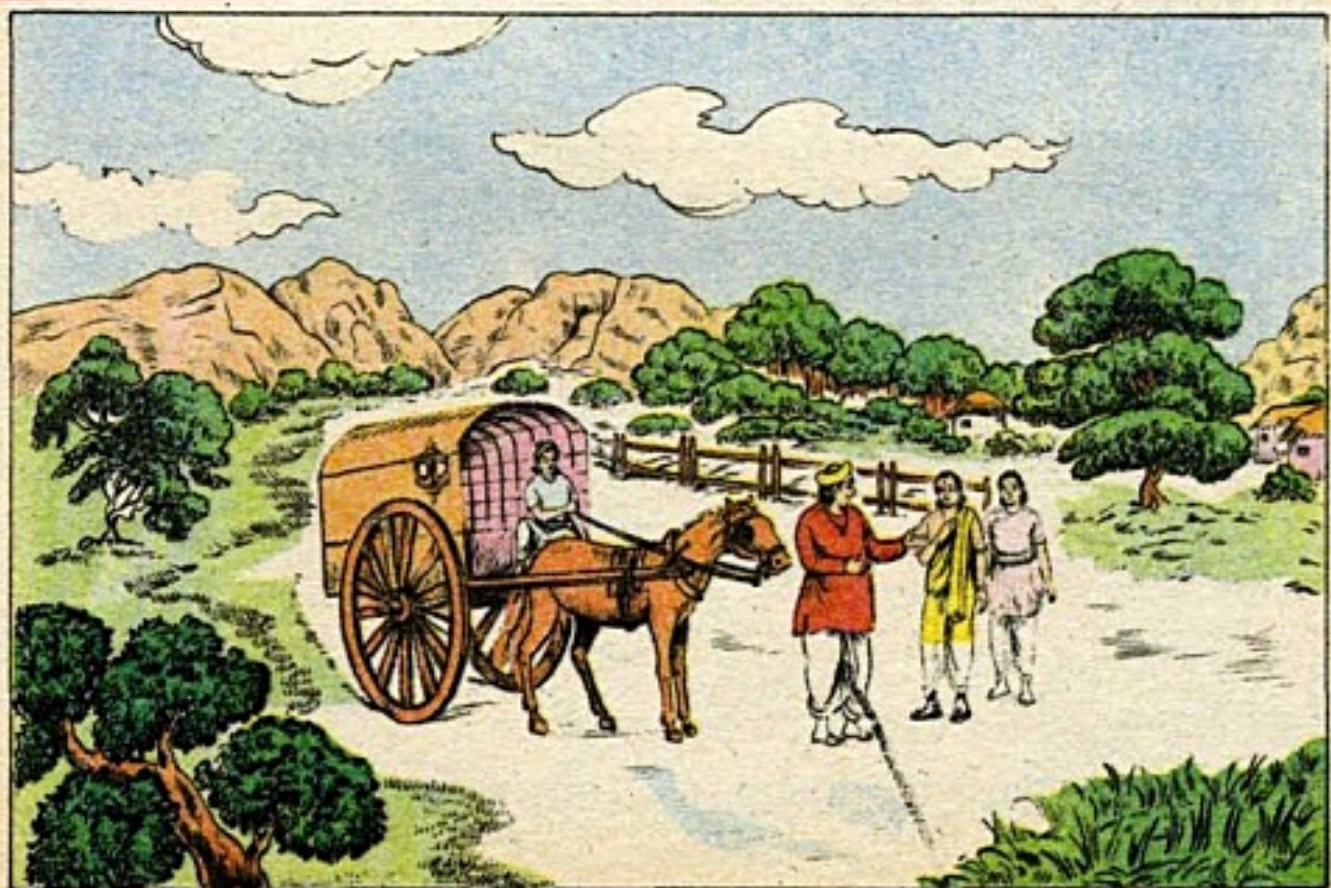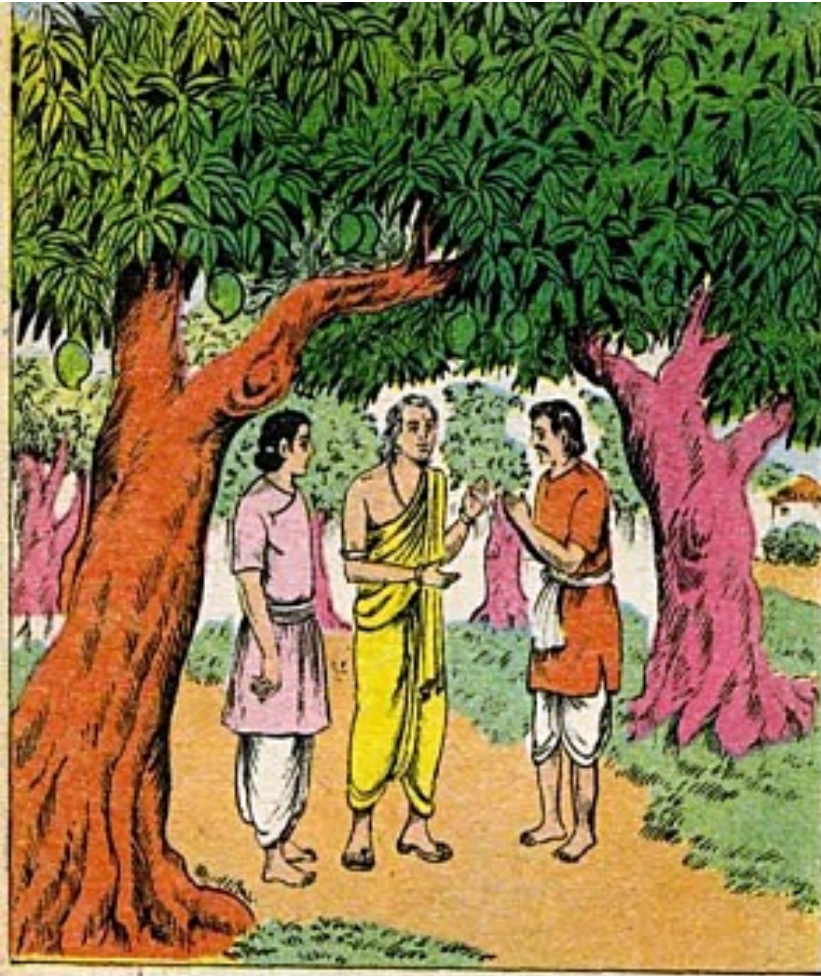
जगपति की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसका दिमाग़ काम नहीं कर रहा था। वे एक आम के बगीचे से गुज़रने लगे। तब पीछे से एक आवाज़ सुनायी पड़ी। ''महाशय, क्या मैं आपके साथ आ सकता हूँ?'' दोनों ने मुड़कर देखा।

एक पतला मध्य वयस्क व्यक्ति साधारण वस्त्र पहना हुआ वहाँ खड़ा था।

पंडित ने उसे देखकर पूछा ''धवल, कैसे हो? क्या बात है?'' ''स्वामी, खेत में काम करने के लिए पड़ोस के गाँवों में मज़दूरों की बड़ी ज़रूरत थी। वहाँ गये एक महीना हो गया था। आज ही लौटा हूँ। आज आपके भोजन का प्रबंध मैंने अपने घर में किया है। यही बात बताने के लिए यहाँ आया था। आपके साथ थोड़ी देर यहीं रहूँगा। भोजन का समय हो जाए तो आपको अपने घर ले जाऊँगा।'' धवल ने कहा।

''मैं तो तुम्हारा घर भली-भाँति जानता हूँ। तुम जाओ। मैं भोजन के समय तक आ जाऊँगा। इस बीच कोई काम-काज हो तो कर लेना'' पंडित ने प्रेम से कहा।

''स्वामी, एक छोटी-सी प्रार्थना है। गाँव जाने के पहले मैंने आपका बताया गीतोपदेश सुना। आपको नहीं मालूम कि उससे मेरे मन को कितनी शांति मिली। आप तो इस गाँव में हफ़्ते में एक बार गीतोपदेश सुनाते ही रहते हैं। इधर मैं नहीं रहा तो चार हफ़्ते उपदेश नहीं सुन पाया। आपको कोई आपत्ति नहीं हो तो आपसे पूछकर जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ'' धवल ने कहा।

पंडित विश्वनाथ ने कहा ''तो चलो।''

फिर उन्होंने गीतोपदेश का सार बताया। जगपति और धवल ध्यान से सुनने लगे। देखते-देखते भोजन का समय हो गया।

जगपति ने सोचा कि गुरु कोई ना कोई बहाना ढूँढ़ेंगे और बिना भोजन किये ही चल पड़ेंगे। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। वे धवल की झोंपड़ी में गये। वहाँ भरपेट खाया। वहाँ से लौटते समय पंडित ने जगपति से कहा "तुम्हारा लोकज्ञान, मेरे बारे में क्या सोच रहा है?"

पहले तो उसने कहने से संकोच किया, पर गुरु का प्रोत्साहन पाकर उसने कहा "लगता है, आपका लोकज्ञान शून्य है। दावत व सम्मान को ठुकराकर एक झोंपड़ी में जाकर भोजन करना क्या इस बात का द्योतक नहीं कि आपमें लोकज्ञान है ही नहीं। अभी इस दिशा में आपको बहुत कुछ सीखना होगा।"

पंडित ने शांतपूर्वक उत्तर दिया "महादेव चाहता था कि मैं उसके काव्य की त्रुटियाँ सुधारूँ। भूषण चाहता था कि मैं उसके पुत्र के गुरु की परीक्षा लूँ। रामचंद्र चाहता था कि 'सम्मान सुधाकर' की अपनी उपाधि की मर्यादा बनाये रखने के लिए मैं उसके यहाँ आऊँ, और भोज स्वीकार करूँ"। उन सभी विषयों में उन्होंने केवल मेरे लिए ही प्रबंध नहीं किया, मुझपर निर्भर नहीं रहे। अगर मैं ना भी कहता तो वे दूसरों के पास जाते। मेहनत करनेवाले धवल की बात कुछ दूसरी ही है। मेरे पांडित्य के लिए उसने मेरी संगति चाही। उसे गीतोपदेश बताने से बढ़कर और क्या भोज हो सकता है ? उस झोंपडी के पास पहुँचने के पहले ही मेरी भूख मिट गयी। धवल जैसे श्रोताओं से बात करना पंडितों के लिए भोज के समान है। जहाँ तक सामान्य व्यक्तियों की बात है, तुम्हारा लोकज्ञान अच्छा ही है, पर पंडितों के पास है अलौकिक लोकज्ञान।"

जगपति तुरंत ही उनके पैरों पर गिर पड़ा और कहा "गुरुवर, यह मेरे लिए प्रथम पाठ है। शिष्य बनकर आपके यहाँ रहते हुए मुझे और कई पाठ सीखने हैं।" उस क्षण से जगपति का लोकज्ञानी होने का गर्व चकनाचूर हो गया।

नित्यानंद की ईमानदारी

हेलापुरी में, राघवेंद्र नामक धनवान के घर में नित्यानंद नामक एक नौकर था। वह घर के कामों के साथ-साथ बाहर के कामों में भी सबकी मदद करता रहता था।

एक दिन जब वह झाड़ू दे रहा था तो उसे पलंग के नीचे चाँदी की एक अशर्फ़ी मिली। उसे उसने राघवेंद्र को दी। उसने नित्यानंद की ईमानदारी पर खुश होकर वह अशर्फ़ी उसे ही दे दी।

कुछ दिनों के बाद राघवेंद्र की बेटी का रत्नों का हार दिखायी नहीं पड़ा। उसने यह बात अपने पिता से कही। घर की सब पेटियों तथा संदूकों को ढुँढ़वाया। जब कोई फ़ायदा नहीं हुआ तो उसने नित्यानंद तथा अन्य नौकरों को बुलाकर पूछताछ की।

नित्यानंद ने कहा ''मालिक, यह रत्न-हार दो दिनों के पहले मुझे स्नान-घर में मिला था।''

यह सुनकर राघवेंद्र ने नाराज़ होकर पूछा ''दो दिनों के पहले ही यह तुम्हें मिल गया था तो अब तक मुझे क्यों नहीं बताया? यह बात क्यों छिपा रखी?''

नित्यानंद ने कहा ''यजमान, जो हार मुझे मिला, वह अगर आपको सौंपता भी तो मेरी ईमानदारी की तारीफ़ करते हुए आप उसे मुझे ही दे देते। आप तो कामों में व्यस्त हैं, इसलिए मैंने सोचा, आपको तक़लीफ़ क्यों पहुँचाऊँ। मैंने हार अपने ही पास रख लिया।''

उसका जवाब सुनकर राघवेंद्र के चेहरे का रंग उड़ गया।

- धनलक्ष्मी

८

(रूपधर के अनुचरों ने अपना वादा नहीं निभाया । जब रूपधर देवताओं की पूजा में मग्न था, तब मायावी के उकसाने पर उन्होंने सूर्यभगवान के पशुओं को मारा और पकाकर खा लिया । इसका फल शीघ्र ही मालूम हो गया । बीच समुंदर में रूपधर की नाव डूब गयी । सब समुद्र में डूबकर मर गये । केवल रूपधर मात्र किनारे पर आ पहुँचा।) -उसके बाद

उस देश के शासक का नाम बुद्धिमान था। वारुणी उसकी पुत्री थी। सबेरे-सबेरे उसने एक विचित्र सपना देखा । उस सपने में उसे एक सहेली दिखायी पड़ी और सहेली ने कहा "अरी वारुणी, इतनी सुस्ती कैसी? कितने ही मैले कपड़ों को धोना है। कल शादी होनेवाली है । क्या मैले कपड़े ही पहनकर शादी करोगी? क्या देखनेवाले ताने नहीं कसेंगे? सबेरा होते ही कपड़े धोने चलते हैं, चलो । मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगी । अपने पिता से कहो कि एक गाड़ी तैयार करें। उतनी दूर तक पैदल चलना मुश्किल है ।"

वारुणी तुरंत उठ बैठी और उसने देखा कि प्रात:काल हो रहा है । उसने निश्चय किया कि सपने में जो उसने देखा, वही करेगी । उसने अपनी माँ को बताया कि कपड़े धोने जा रही हूँ। फिर पिता के पास

गयी। वह उस समय सेनापतियों से मिलने निकल रहा था।

"पिताजी, मुझे एक बड़ी गाड़ी चाहिये। मैं नदी पर जाकर मैले कपड़े धोऊँगी। बहुत समय से कपड़े नहीं धुले हैं। घर लोगों से भरा पड़ा है। हर कोई धुले कपड़ों की माँग कर रहा है" वारुणी ने अपने पिता से कहा।

बुद्धिमान ने कहा "क्यों नहीं बेटी, क्यों नहीं। नौकरों से कहकर तुम्हें जितनी बड़ी गाड़ी चाहिये, इंतज़ाम कर लेना।"

तुरंत खच्चरों और गाड़ी का प्रबंध हो गया। वारुणी और सहेलियों ने आवश्यक भोजन-सामग्री भी ले ली। वारुणी गाड़ी में बैठी और खच्चरों को चाबुक से मारकर हाँकने लगी। बहुत-सी दासियाँ बातें करती हुई गाड़ी के पीछे-पीछे आने लगीं।

थोड़ी देर के बाद वे नदी के किनारे आयीं। खच्चरों को खोलकर आज़ाद करके चरने छोड़ दिया। फिर गीत गाती हुई कपड़े धोने लगीं। काम पूरा होते ही नदी में नहाने गयीं। वापस आकर कपड़ों को सुखाया और भोजन किया।

फिर गीत गाती हुई गेंद खेलने लगीं। गेंद पानी में गिर गयी। सबने चिल्लाना शुरु कर दिया।

इन चिल्लाहटों से रूपधर नींद से जाग गया। वह झाड़ियों से बाहर आया और वारुणी तथा उसकी दासियों को देखा। धूल से भरपूर उसके आकार को देखकर वारुणी की दासियाँ घबरा गयीं। ड़र के मारे पेड़ों व झाड़ियों के पीछे छिप गयीं। वारुणी मात्र निर्भय हो जहाँ की तहाँ खड़ी रही।

रूपधर ने दूर ही खड़े होकर विनयपूर्वक कहा "सुँदरी, तुम मानव हो या देवी, मुझे नहीं मालूम। तुम्हारी लंबाई व सुँदरता देखते हुए मुझे लगता है कि तुम देवी हो। अगर तुम मानव हो तो तुम्हें जन्म देनेवालों को महाभाग्यवान कहूँगा। तुम्हारे भाई-बहन भी कितने ही भाग्यशाली हैं। तुमसे शादी रचानेवाले के नसीब का क्या कहूँ।

शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। मैंने बहुत-से देशों में भ्रमण किया, किन्तु आज तक तुम जैसी परम सुँदरी को नहीं देखा। अब मैं बड़ी ही दीन स्थिति में हूँ। बीस दिनों तक मैंने समुँदर में नाना प्रकार की यातनाएँ सहीं। कल ही इस किनारे पर पहुँचा हूँ। यह देश मेरे लिए नया है। तुम अकेली ही मेरी रक्षा कर सकती हो। मेरी दीन स्थिति पर दया करो, मुझे पहनने के लिए एक कपड़ा दो और बताओ कि मुझे किस दिशा में जाना है। तुमने मेरा यह उपकार किया तो मैं तुम्हारा बड़ा आभारी रहूँगा।''

''महाशय, आप अक़्लमंद लग रहे हैं। सर्व सुख तो देवता ही प्रदान कर सकते हैं, पर अब आप मेरे देश में हैं। यहाँ आपको अन्न और वस्त्र की कोई कमी नहीं होगी। यह मेरा आश्वासन है। मैं आपको हमारे नगर में जाने की दिशा भी बताऊँगी। यह पैयासिया देश है। बुद्धिमान इस देश के राजा हैं। मैं उनकी पुत्री हूँ।''

फिर उसने अपनी दासियों को बुलाया और उनसे कहा ''क्यों डरपोकों की तरह भाग गयीं? इन्हें खाने के लिये कुछ दो। नदी में स्नान कराओ।''

दासियों ने रूपधर को स्नान करने की जगह दिखायी। स्नान के बाद उसे पहनने को कपड़े भी दिये। रूपधर ने नदी में उतरकर अपने शरीर को खूब रगड़ा। नमक व मिट्टी जमी हुई थी। उन्हें खूब अच्छी तरह धोकर अपने शरीर को साफ़ किया। फिर राजकुमारी के दिये कपड़े पहने। सुदृढ़ और मनोहर मूर्ति की तरह चमकता हुआ वह बाहर आया। वारुणी नें जब पहले उसे देखा तब वह बड़ा ही विकृत और गंदा लगा था। अब उसे लगने लगा कि रूपधर कोई स्वर्ग का साक्षात् देवता है। उसे विचार आया कि यदि ऐसा पति मिले तो कितना अच्छा होगा। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिये? उसने मन में इच्छा की कि वह शाश्वत रूप से उसी के देश में रह जाए।
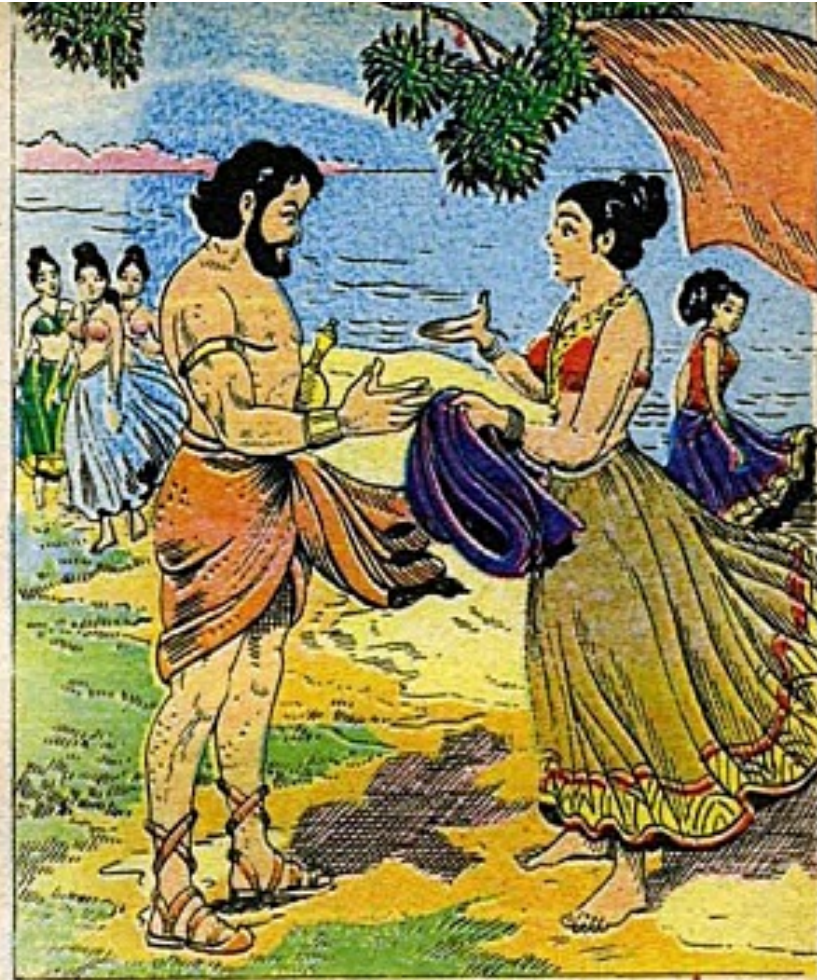
बाद में दासियों ने उसे भोजन खिलाया।
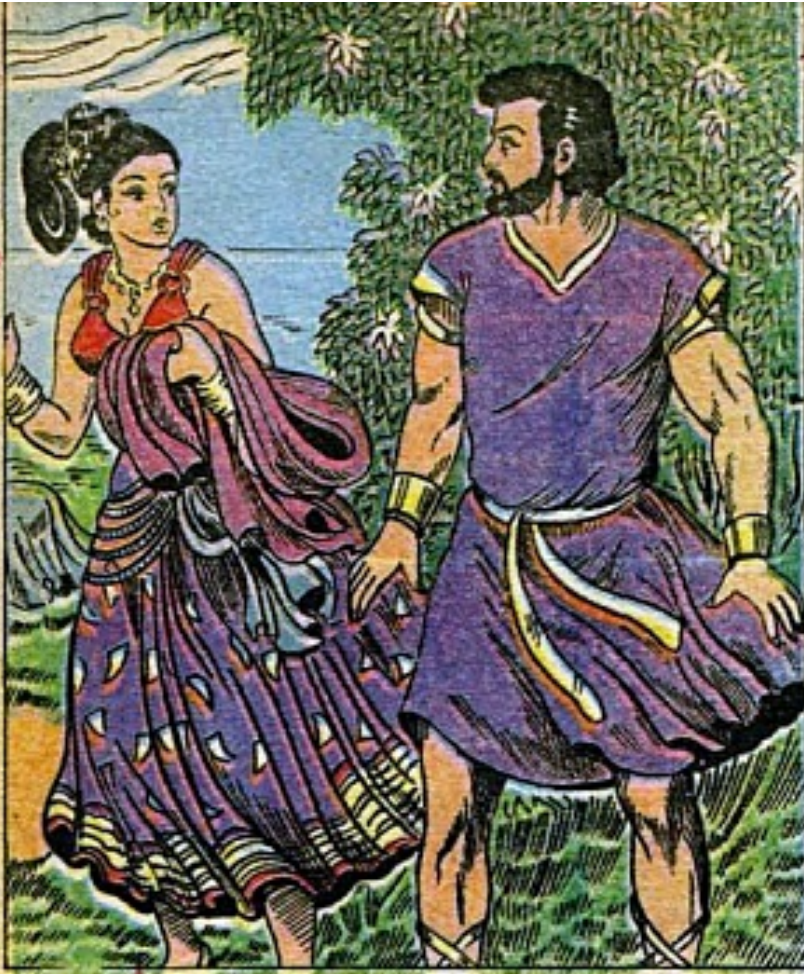
रूपधर के खाना खाये बहुत दिन हो गये थे।

इस बीच में वारुणी गंभीर रूप से सोचने लगी कि अब आगे क्या होगा। वह युवती है, अविवाहिता है। उस देश में कितने ही पुरुष उससे शादी करने को उतावले हैं। पहले ही वह उनका तिरस्कार कर चुकी है। इन परिस्थितियों में रूपधर को अपने साथ नगर में ले जाना उचित नहीं होगा। वहाँ सब यह कहकर व्यंग्य के बाण बरसायेंगे कि एक अनजाने आदमी को पति बनाकर ले आयी है।

इसलिए वारुणी ने निश्चय किया कि ऐसा व्यक्ति उसका अतिथि बनकर उसके साथ न आये, बल्कि वह स्वयं आतिथ्य पाने उसके घर चला आये। यही सब प्रकार से उचित होगा।

सूखे हुए कपड़ों को जब दासियाँ बटोरने लगीं तो उसने रूपधर से कहा "अब हम घर लौटेंगे और आप दूसरों के साथ-साथ मेरी गाड़ी के पीछे-पछे आइये। वहाँ क़िले की दीवारों तक ही आइये। किन्तु मेरे साथ नगर में प्रवेश मत कीजिये। लोग तरह-तरह की बातें करने लगेंगे। नगर के बाहर एक बगीचा है। उसमें विश्राम कीजिए। मेरे पहुँच जाने के कुछ समय के बाद सीधे हमारे घर आइये। बच्चे भी बता देंगे कि हमारा घर कहाँ है। मेरे घर पहुँचने के बाद कहीं मत रुकिये। सीधे घर में आ जाना। वहाँ मेरे माता-पिता दिखायी देंगे।

निस्संकोच ही मेरी माँ के पास आकर, होशियारी से बरतना और उससे बातें करना, आतिथ्य माँगना। आपका व्यवहार अगर उसे अच्छा लगा तो आपका काम अवश्य पूरा होगा। राजभवन में उसका वचन कभी खाली नहीं जाता। वहाँ उसकी बात का विरोध करनेवाला कोई नहीं है। आपका भाग्य अच्छा है तो आपको आवश्यक सहायता प्राप्त होगी।"

उसके वाद वारुणी गाड़ी में बैठी और खच्चरों को आवाज़ दी। गाड़ी निकल पड़ी।

सब निकल पड़े। बगीचे के पास पहुँचने के बाद रूपधर वहीं रुक गया। बाकी सब चले गये। सूर्यास्त के बाद अपनी इष्टदेवी बुद्धिमति का स्मरण करके रूपधर राजभवन की ओर चला।

इतने में वारुणी राजभवन पहुँची। उसके भाई धुले हुए कपड़ों को अंदर ले गये। वारुणी को तभी मालूम हुआ कि चूल्हे जलाये गये और रसोई का काम शुरू हो गया है।

रूपधर ने नगर में प्रवेश किया। अंधेरे में उसे किसी ने ग़ौर से नहीं देखा था। एक छोटी-सी लड़की बरतन सिर पर रखे आती हुई दिखायी पड़ी। रूपधर ने उससे पूछा "मैं परदेशी हूँ। क्या मुझे बुद्धिमान राजा का घर दिखाओगी?"

"आओ चाचा, मैं दिखाती हूँ। यहाँ औरों से इस तरह की बातें मत करो। क्योंकि यहाँ के लोग परदेशियों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए चुप होकर, किसी से कोई बात किये बिना, मेरे पीछे-पीछे आना।"

रूपधर उसके साथ राजभवन पहुँचा। वह भवन भव्य था। वह अंदर प्रवेश करने से झिझका। बहुत देर तक वहीं खड़े होकर, मशालों के मद्दिम प्रकाश में कामों में लगीं बांदियों को देखता रहा। फिर उसने देखा कि वहाँ चार एकड़ों में फैला फलों का बाग़ है। उसने धैर्य समेटकर आख़िर अंदर क़दम रखा। वारुणी के कहे अनुसार ही वह सीधे अंदर आया।
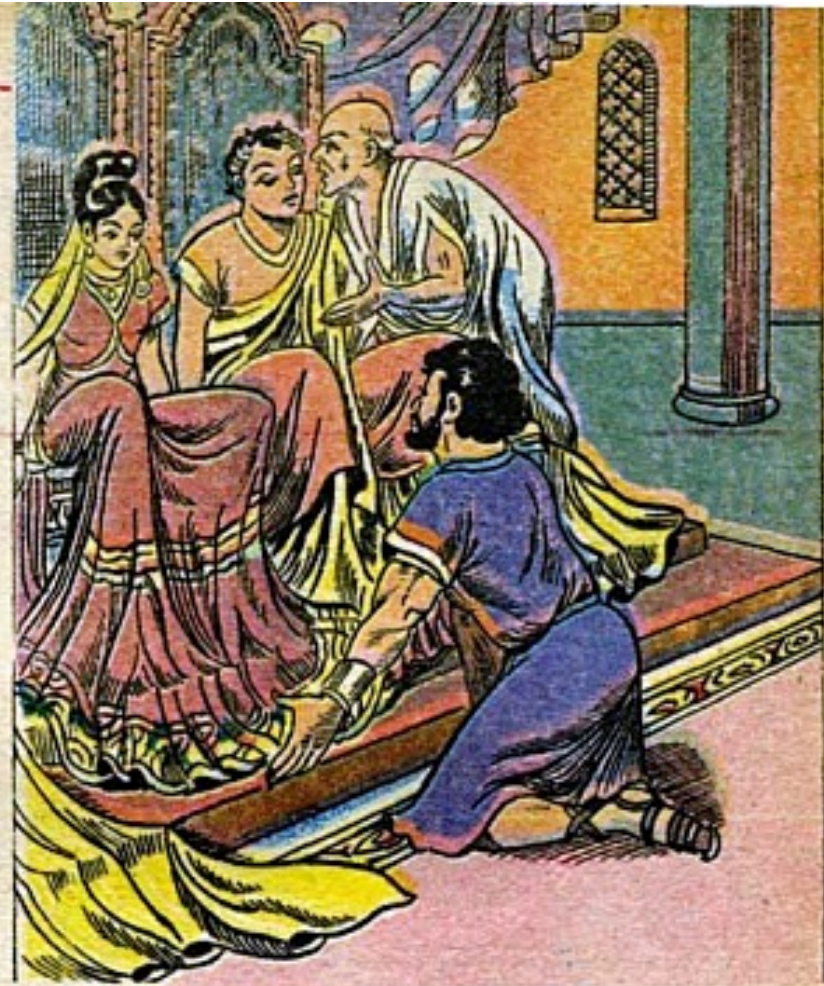
अंदर एक विशाल मंडप में नगर के बड़े लोग भोजन करने बैठे हुए थे। रूपधर वहाँ से होता हुआ अंदर गया, जहाँ उसने राजा और रानी को देखा। रूपधर ने सीधे रानी के सामने घुटने टेककर कहा "महारानी, मैं एक अभागा हूँ। एक शरणार्थी बनकर आपके पास आया हूँ। आप और आपका परिवार सुखी और समृद्ध रहे। स्वदेश लौटने के लिए मुझे आपकी सहायता चाहिये।"

उसकी बातें सुनते हुए वहाँ उपस्थित

सब लोग स्तब्ध रह गये। आख़िर एक वृद्ध ने महाराज से कहा "राजन्, हमारे अतिथि के भूमि पर बैठे रहने से हमारी मर्यादा को धक्का लगेगा। इसलिए आप स्वयं इस आदमी को उचित आसन पर बिठाइये और उसे भी भोजन करने के लिए बुलाइये।"

बुद्धिमान रूपधर का हाथ पकड़कर ले आया और उसे अपने ही बगल में अपने बड़े बेटे के आसन पर बिठाया। रूपधर के लिए उस युवक ने अपना आसन खाली किया और स्वयं दूसरी जगह पर बैठ गया। फिर सबने मिलकर भोजन किया।

भोजन कर चुकने के बाद बुद्धिमान ने खड़े होकर उपस्थित सज्जनों से कहा "आप सब भोजन कर चुके। अब जाकर विश्राम कीजिये। कल सबेरे तड़के ही हम फिर मिलेंगे। हमारे अतिथि का मनोरंजन करवायेंगे और उनकी यात्रा के बारे में चर्चा करेंगे।"

उनका स्वदेश कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, उन्हें सकुशल वहाँ पहुँचाना हमारा परम कर्तव्य है। हमारे सुव्यवस्थित प्रबंधों के बाद भी उन्हें कष्ट झेलने पड़ें तो यह उनका दुर्भाग्य ही कहना ठीक होगा। ये मानव के रूप में अवतरित देवता भी हों तो हमारे लिए यह कोई नयी बात नहीं। देवता कभी-कभी मनुष्य के रूप में पधारते हैं और हमारे साथ भोजन करते हैं, मनोरंजन के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यह तो बहुत समय से चला आ रहा है।"

उक्त बातों को सुनते ही रूपधर ने कहा "महाराज, आप इस भ्रम में न रहिये। मैं देवता नहीं हूँ, मानव ही हूँ। वह मानव, जिसने अनगिनत कष्ट झेले। शायद किसी और ने इतने कष्ट नहीं झेले होंगे। इसलिए मुझे इन कष्टों से उबारने में मेरी मदद करिये। अब मेरी एक ही इच्छा है। मेरा एक ही उद्देश्य है कि अपने देश को जाऊँ और अपने लोगों को देखूँ और मर जाऊँ।"

उसकी बातों से सबके मन में रूपधरके

प्रति सहानुभूति पैदा हुई। सबने अपनी सहानुभूति प्रकट की। सबके चले जाने के बाद राजा और रानी ही रह गये।

रानी ने रूपधर को ग़ौर से देखा। उसे मालूम हो गया कि रूपधर के पहने वस्त्र अपने हाथों से सिये हुए वस्त्र हैं। उसने कहा "पुत्र, प्रथम प्रश्न मैं ही तुमसे पूछ रही हूँ। तुम कौन हो? कहाँ से आ रहे हो? ये वस्त्र तुम्हें किसने दिये? तुमने कहा था ना कि तुम समुद्र में बहकर आये थे।"

सम्मोहिनी की क़ैद से छूटकर आने से लेकर, इस देश के समुद्री किनारे पर आ जाने तक की वास्तविक कहानी उसने विस्तार से सुनायी।

उसने सत्य छिपाये बिना यह भी कह दिया कि वारुणी से उसकी मुलाक़ात कहाँ और कैसे हुई। उसने यह भी बताया कि वारुणी ने उसपर दया दिखाकर खाना भी खिलाया और कपड़े भी दिये।

सब सुनकर बुद्धिमान ने कहा "महोदय, मेरी बेटी ने बड़ी ही ग़लती की। उसे आपको अपने साथ ही ले आना चाहिए था।"

"महाराज, उसे कोसिये मत। उसने अपने साथ ही आने को कहा। पर डर के मारे मैं ऐसा न कर सका।" रूपधर ने कहा।

"आप हमारी पुत्री से विवाह करके यहीं रह जाने की इच्छा भी रखते तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती। आप किसी संकोच में मत पड़े रहिये। आज सो जाइये। कल आपकी यात्रा की व्यवस्था करूँगा। यह मेरी जिम्मेदारी है कि आपको स्वदेश सकुशल भेजूँ। हमारे जहाज़ों से बढ़कर अच्छे जहाज, हमारे नाविकों से बढ़कर कुशल नाविक संसार में कहीं और नहीं होंगे।" राजा ने कहा।

वे जब इन बातों में व्यस्त थे, तब रानी ने उसके सोने का इंतज़ाम किया। अपने समस्त कष्टों को भुलाकर रूपधर निद्रा की गोद में चला गया।

- सशेष

पड़ोसियों की सहायता

गर्मी के दिनों में रामपुर गाँव की एक झोंपड़ी में आग लग गयी। आग बुझाने के लिए अड़ोस-पड़ोस के कुछ लोग कुओं से पानी खींच रहे थे तो कुछ लोग उस पानी को ले जाकर आग बुझा रहे थे। कुछ और लोग नज़दीक के तालाब से बरतन में भरकर पानी ला रहे थे।

इतना सब कुछ हो रहा था। पर, नकुल मात्र नीम के पेड़ के नीचे बैठे गुनगुना रहा था।

उस समय पड़ोस के गाँव का एक आदमी उधर से गुज़र रहा था। नकुल को देखकर उसे ताज्जुब हुआ। उसने नकुल से पूछा "कैसे आदमी हो तुम? इतने लोग पड़ोसी की सहायता में लगे हुए हैं, तक़लीफ़ें उठा रहे हैं और तुम शीतल छाया में बैठकर गुनगुना रहे हो?"

नकुल ने आराम से जवाब दिया "वह पड़ोसी मैं ही हूँ। आज जलती मेरी झोंपड़ी को जो लोग बुझाने में लगे हुए हैं, उनसे मैंने पहले छोटी-सी रक़म मांगी थी। उनमें से किसी ने भी मेरी मदद नहीं की। अब भी वे मेरी कोई सहायता नहीं कर रहे हैं।"

"अंटसट क्या बक रहे हो? तुम्हारी झोंपड़ी को जलने से बचाने की उनकी कोशिशें सहायता नहीं तो और क्या है?" पड़ोसी गाँववाले ने आश्चर्य से पूछा।

"बिल्कुल नहीं। बग़ल की झोंपड़ियाँ और घर जल ना जाएँ, इसके लिए वो लोग अपनी सहायता आप ही कर रहे हैं।" नकुल ने कहा।

\- रवींद्र
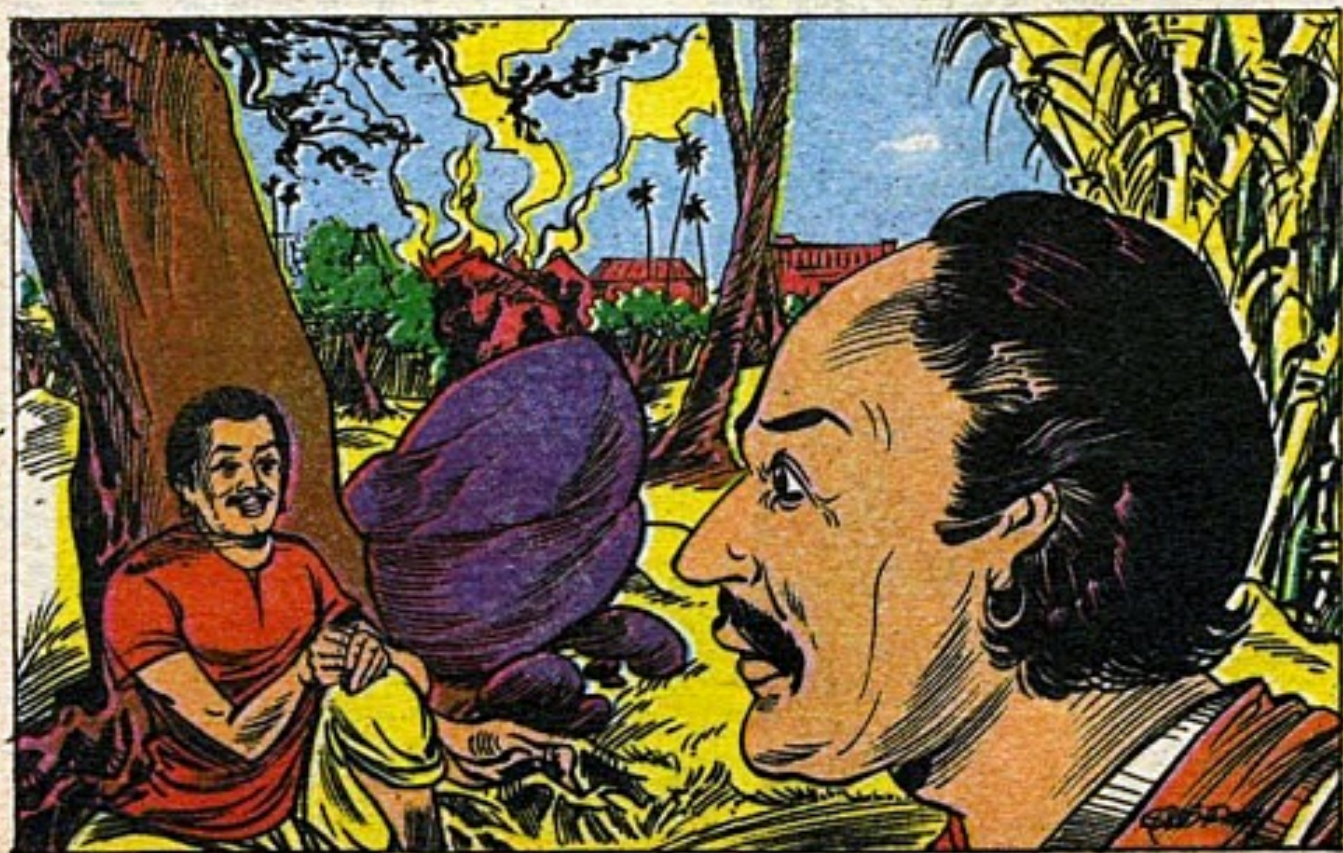
स्वप्न-सुँदरी

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। उसने पेड़ से शव को उतारा। अपने कंधे पर ड़ाल लिया और श्मशान की ओर बढ़ता गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मैं बार-बार तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। किन्तु तुम अनसुनी कर रहे हो। तुम तो जानते ही हो इस श्मशान में सियार हैं, विषसर्प हैं, भूत-प्रेत जैसे क्षुद्र जीव हैं। तिसपर घोर अंधकार है। इस अंधकार में कुछ भी हो सकता है। तुम्हारा प्राण भी संकट में पड़ सकता है। इस श्मशान में रहकर कष्ट झेलने जा रहे हो। आख़िर क्यों? तुम्हें देखकर मेरा हृदय दया से पसीज उठता है। साथ ही मुझे शंका भी हो रही है कि तुम कोई साधारण मनुष्य नहीं बल्कि असाधारण और अलौकिक मनुष्य हो। शारीरिक और मानसिक रूप से अति उत्तम स्थान पर पहुँचे स्थितप्रज्ञ हो। जो भी हो, एक बार याद रखो, अपूर्व या अलौकिक अनुभव मनुष्य को

बैताल कथा

दुख ही पहुँचाने का कारण बनता है। उदाहरणार्थ मैं तुम्हें पुष्पशर नामक एक युवक की कथा सुनाऊँगा।'' यों कहकर बेताल कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। एक देश में पुष्पशर नामक एक युवक था। वह राजवंश का था, बहुत ही संपन्न था। अलावा इसके, वह बहुत ही सुँदर था। दूर-दूर देशों से विवाह के प्रस्ताव आया करते थे। किन्तु कोई भी कन्या उसे पसंद नहीं आती थी। उसका एक कारण भी था। उसके मन में एक स्वप्न-सुँदरी घर कर गयी थी। इसलिए वह उसी असाधारण सुँदरी की खोज में लगा रहता था।

पुष्पशर ने सुन रखा था कि गंधमादन पर्वतप्राँतों में जो सरोवर है, वहाँ पूर्णिमा के दिन गंधर्व कन्याएँ आया करती हैं। मार्गमध्य के जंगलों में क्रूर जंतु रहते थे, इसलिए किसी ने भी वहाँ जाने का साहस नहीं किया। पुष्पशर अपनी जान पर खेल गया और अपनी स्वप्न-सुँदरी की खोज में वहाँ पहुँचा।

यह सरोवर एक गंधर्व राजा का था। उसकी पुत्रियाँ अक्सर वहाँ नहाने के लिये आया करती थीं। पुष्पशर ने वहाँ आयी हुई प्रियवादिका नामक गंधर्व राजा की पुत्री को देखा। उसे देखते ही पुष्पशर को लगा कि यही मेरी स्वप्न-सुँदरी है। वह अपने मन की बात बताने ही वाला था कि प्रियवादिका सरोवर में कूद पड़ी और ग़ायब हो गयी।

अचानक ग़ायब हो जाने से पुष्पशर निराश नहीं हुआ। वह उसी सरोवर-प्राँत में रहने लगा। तीसरी पूर्णिमा के दिन प्रियवादिका उसे दिखायी पड़ी। इस बार उसने जागरूकता बरती। वह पेड़ों के पीछे छिप गया और जैसे ही वह पास आयी, उसने उसका हाथ एकदम पकड़ लिया। पर प्रियवादिका ने ज़ोर लगाया और अपना हाथ छुड़ा लिया। फिर सरोवर में कूदकर ग़ायब हो गयी।

उसे ढूँढ़कर पकड़ने के लिए वह सरोवर में कूदने ही वाला था कि 'ठहरो' कहकर एक गंभीर स्वर सुनायी पड़ा। तुरंत गंधर्व राजा, एक ही जैसी दीखनेवाली तीन गंधर्व कन्याओं के साथ सरोवर से बाहर आया। उसने पुष्पशर

से कहा "ये तीनों मेरी पुत्रियाँ हैं। बताना कि इनमें से तुमने किससे प्रेम किया ? अगर तुमने सही पहचाना तो मैं उसे तुम्हें दे दूँगा।"

पुष्पशर ने उन तीनों को ध्यान से देखा। सोच में पड़ गया कि एक गुलाब की एक समान पंखुड़ियाँ जैसी दीखनेवाली इन तीनों कन्याओं में से मेरी स्वप्न-सुँदरी कौन हो सकती है, जिसे मैं इसके पहले भी देख चुका हूँ। उसे लग रहा था कि यह कठिन कार्य है और मुझसे नहीं हो पायेगा तो बिजली की तरह एक विचार उसके दिमाग़ में जाग उठा। उनके दायें हाथ को उसने ध्यान से देखा। उसने देखा कि उनमें से एक कन्या के दायें हाथ की कलाई सूजी हुई है।

अब पुष्पशर को पहचानने में कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई। उसने गंधर्वराजा को वह कन्या दिखायी। गंधर्वराजा उसकी अक़्लमंदी पर बहुत खुश हुआ और बोला "शाबाश, तुमने बिल्कुल ठीक ही पहचाना है। मेरी पुत्री प्रियवादिका भी तुम्हें चाहती है। पर एक शर्त है। शांत-गुण गंधर्वों का धर्म है। इस धर्म का पालन तुम्हें भी करना होगा। किसी भी परिस्थिति में उसे खोना नहीं चाहिये। मेरी पुत्री के प्रति तुम्हारा व्यवहार सदा शांत होगा। कभी क्रोधित होकर, अपने आपे से बाहर होकर तीन बार तुमने उसे पीटा तो वह निश्चित रूप से तुम्हें

छोड़कर चली आयेगी। जब तक तुम इस शर्त का पालन करते रहोगे, तब तक वह तुम्हारे साथ ही रहेगी।" कहकर, प्रियवादिका को उसने वहीं छोड़ दिया और बाक़ी दोनों पुत्रियों को लेकर वहाँ से ग़ायब हो गया। प्रियवादिका लज्ञा से सिर झुकाये खड़ी थी। पुष्पशर ने वहीं तभी गांधर्व पद्धति के अनुसार विवाह कर लिया और अपना नगर ले गया।

कुछ दिनों बाद उसे अपनी पत्नी के साथ, अपने बचपन के एक दोस्त के घर जाना पड़ा। उस दोस्त का बच्चा हुआ था। उस बच्चे को झूले में लिटानेवाले हैं। इस उत्सव में भाग लेने बहुत लोग आये। पुष्पशर ने लायी भेंटें उस बच्चे की माँ को दीं। फिर उसने बच्चे को

उठाया और चूमा। वह उस बच्चे को प्रियवादिका के हाथ में देना चाहता था।

किन्तु बच्चे को देखते ही प्रियवादिका ने अपना मुँह फेर लिया। उसके मुख पर घृणा के भाव स्पष्ट दीख रहे थे। वह तुरंत वहाँ से चली गयी। वहाँ जितने भी मौजूद थे, सब उसके बरताव को देखकर चकित रह गये। पुष्पशर के आश्चर्य का ठिकाना ना रहा। जैसे ही घर लौटा, उसने उससे नाराज़ी से पूछा "बच्चे को देखते ही क्यों विमुख होकर ऐसे चली आयी ?"

"उसे गोद में लेने की इच्छा नहीं हुई" प्रियवादिका ने कहा। "मैं पूछ रहा हूँ कि तुमने ऐसा क्यों किया?" पुष्पशर ने पूछा।

"कारण नहीं बताऊँगी" प्रियवादिका ने स्पष्ट कह दिया। पुष्पशर अपने को नियंत्रण में न रख सका और उसने गाल पर चपत मार दिया।

प्रियवादिका की आँखों में आँसू आ गये। उसने कहा "बच्चे को देखते ही, मुझे कुछ ऐसी बाते मालूम हो गयीं, जो आप नहीं जानते। बड़ा होकर वह बहुत ही बड़ा दुष्ट होगा। बहुतों की हत्या करने के बाद सूली पर चढ़ेगा। ऐसे एक पापी बच्चे को मैं छूना भी नहीं चाहती थी। इसपर आप नाराज़ हो उठे। यह पहला तमाचा है। गाँठ बांध लीजियेगा।"

पुष्पशर को अपनी ग़लती महसूस हुई। उसने निर्णय कर लिया कि अब सावधान रहना है, अपने को आप से बाहर नहीं जाने देना है। उस क्षण से वह अपनी पत्नी से बड़े प्यार से व्यवहार करने लगा।

इसके ठीक एक महीने के बाद उसे अपनी पत्नी के साथ नगराध्यक्ष की बेटी की शादी पर जाना पड़ा। वह उसका निकटतम दोस्त था।

अध्यक्ष ने पुष्पशर और प्रियवादिका का हृदयपूर्वक स्वागत किया। उन्हें विवाह-मंडप में ले आया। वर, वधु के गले में मंगलसूत्र बाँधने ही वाला है। इस कोलाहलमय, आनंद पूरित वातावरण में प्रियवादिका अचानक ज़ोर-शोर से रोने लग गयी। लोग ताज्जुब में

आकर उसे एकटक देखने लगे।

तब पुष्पशर ने बड़े ही कोमल स्वर में पत्नी से पूछा "क्या हुआ? क्यों रो रही हो?" तो प्रियवादिका ने कहा "क्या कहूँ, कैसे कहूँ? दोनों एक दूसरे के योग्य नहीं हैं। विवाह के बाद कट्टर दुश्मनों की तरह आपस में झगड़ते रहेंगे। वे परिवार बसाएँगे ही नहीं, युद्ध-क्षेत्र खड़ा कर देंगे।"

पुष्पशर ने नाराज़ हो प्रियवादिका के कंधों को झुलाते हुए कहा "रोना बंद कर दो। चुप हो जाओ।" "आपने मुझपर दूसरी बार हाथ उठाया है।" कहती हुई प्रियवादिका नाराज़ होती हुई चली गयी।

इस घटना के बाद पुष्पशर, अपनी पत्नी के प्रति बुहत ही जागरूक रहने लगा। वह किसी भी स्थिति में उसे खोना नहीं चाहता था। अब केवल एक मौक़ा बाक़ी रह गया।

कुछ दिनों के बाद, अपनी पत्नी को लेकर उसे अपने चाचा के घर जाना पड़ा। क्योंकि उसके चाचा के बेटे की मृत्यु हो गयी थी। जो मरा, उसकी भी उम्र लगभग पुष्पशर की थी। उसकी पत्नी शव पर गिरकर रोये जा रही थी। उसका रोदन सुनकर दूसरों के मनों में भी शोक छा गया। वे भी रोने लगे। ऐसे विषादमय वातावरण में प्रियवादिका अचानक ज़ोर से हँसने लगी। सब उसी की ओर देखते रह गये। पुष्पशर ने धीरे से उसके कान में कहा "ऐसे समय पर रोना चाहिये। देखो, उस युवक के मर जाने से लोग कितने दुखी हैं।" फिर भी प्रियवादिका अपनी हँसी रोक नहीं पायी। पुष्पशर अपना संयम खो बैठा और जोर से तमाचा मार दिया।

प्रियवादिका ने तुरंत हँसी रोक दी और कहा "जो मरा, बड़ा ही भाग्यशाली है। वह सम्राट का पुत्र बनकर जन्म ले चुका है। ऐसे भाग्यशाली पर आपको रोता हुआ देखकर मुझे हँसी आ गयी। तुमने मेरे पिता को दिये वचन को तोड़ा है। अब तुम्हारे साथ मैं नहीं रहूँगी।" कहकर वह गंधमादन पर्वतों की ओर जाने लगी। पुष्पशर ने उसे रोकने की कोई कोशिश नहीं की। निर्लिप्त होकर वह देखता रह गया।

बेताल ने कहानी सुनाकर राजा से कहा

"राजन्, जो हुआ, उसके बारे में मेरे बहुत से सदेह हैं। पुष्पशर ने गंधर्वराजा की शर्त का उल्लंघन क्यों किया ? उसे छोड़कर जाती हुई प्रियवादिका को रोकने की कोशिश क्यों नहीं की ? उसके प्रति प्रेम की क्षीणता के कारण क्या उसने ऐसा किया ? इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सर फट जायेगा।"

विक्रमार्क ने उत्तर दिया, "मानव और गंधर्वी के बीच होनेवाला विवाह धर्म-विरुद्ध है। उसे विवाह ही नहीं कहा जा सकता। पुष्पशर का प्रियवादिका के प्रति प्रेम स्थायी था। पर, वह अपने मानव-स्वभाव में परिवर्तन नहीं ला पाया। इसी प्रकार प्रियवादिका भी अपने गांधर्व-स्वभाव को बदल नहीं पायी। उन दोनों के धर्मों में जो वैरुध्य था, वह उनकी व्यवहार-शैली में प्रकट हो गया। दैवधर्म का पालन मानव नहीं कर सकता। वह संघजीवी है। स्त्री के प्रति प्रेम मात्र ही किसी मानव के जीवन को परिपूर्ण नहीं कर सकता। पुष्पशर ने जब तीनों बार अपनी पत्नी को मारा, तब उसने यही सोचा कि ऐसी स्थिति में समाज मेरे बारे में क्या सोचेगा। उसे उस समय याद नहीं आया कि उसने क्या वचन दिया और शर्त क्या थी। प्रियवादिका में भी गंधर्वकन्या होने के नाते असाधारण शक्ति थी। अपनी इस शक्ति के बल पर ही वह दूसरों का भविष्य बता पाती थी, इसलिए उसने जो चाहा, किया। वह भूल ही गयी कि मैं एक मानव की पत्नी हूँ और मेरी कुछ सीमाएँ हैं। वह मानव समाज की रीतियों और पद्धतियों के अनुसार नहीं चल सकी। जब पुष्पशर को ज्ञात हो गया कि हम दोनों के धर्म में वैरुध्य है और यह सहज है तो उसे यह कठोर सत्य जानने में विलंब नहीं हुआ कि हम दोनों पति-पत्नी बनकर नहीं रह सकते और हमारा यह संबंध शाश्वत नहीं हो सकता। इसी कारण चली जाती हुई प्रियवादिका को उसने रोकने की भी कोशिश नहीं की।"

इस प्रकार राजा के मौन-भंग में सफ़ल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार : धर्मनंदन पंत की रचना

योगी की सलाह

गोपी नामक युवक को ज़मींदार के सभा-स्थल में छोटी-सी नौकरी मिली। इससे विवाह के प्रस्ताव आने लगे। कमला नामक एक छोटे-से समृद्ध परिवार की कन्या से उसका विवाह संपन्न हुआ।

कमला जैसे ही ससुराल आयी, वहाँ अड़ोस-पड़ोस की रईस औरतों को देखकर, गोपी पर दबाव डालने लगी कि उन्हीं की तरह गहने, साड़ियाँ आदि उसे भी चाहिये।

घर के इस अशांत वातावरण से गोपी परेशान हो गया। वह अपने काम में ढ़िलाई दिखाता रहा। फलस्वरूप वह नौकरी से निकाल दिया गया। ज़िन्दगी से उसे चिढ़-सी हो गयी। वह जीवन से विरक्त हो गया था।

एक दिन शाम को गोपी एक योगी के पास आया और कहा "स्वामी, मेरी पत्नी चुडैल है। जीवन के प्रति मेरी कोई अभिरुचि नहीं रह गयी। सुना है कि आप सिद्ध योगी हैं। आप मुझे एक नया जीवन प्रदान कीजिये। बस, आप इतना मात्र कीजिये कि मैं पुनः मानव होकर जन्म न लूँ।"

उसकी बातें सुनकर योगी ने मुस्कुराकर कहा "पुत्र, बताओ कि अपना शेष जीवन कैसे बिताना चाहते हो।" गोपी उत्तर देने ही वाला था कि झूमती हवा के कारण मौलसिरी के पेड़ से कुछ फूल उन दोनों के सिरों पर गिरे, जिसके नीचे वे बैठे हुए थे।

सुगंध फैलाते हुए उन फूलों को देखकर गोपी ने कहा "मैं फूल का जन्म लेना चाहता हूँ।" योगी ने उसे आँखें बंद करने के लिए कहा और उसके माथे पर अपनी उँगलियों से कुछ लिखा। तुरंत ही गोपी ने फूल बनकर जन्म लिया। क्षण भर के लिए उसे यह जन्म बहुत ही मधुर लगा। पर, इतने में उसे डर लगने लगा। तरह तरह के संदेह उसे व्याकुल करने लगे। जिस पेड़ का वह फूल बना, अगर

रामकृष्ण

उसे पानी से सींचा न जाए। अचानक कोई लड़की आ जाए और उसे तोड़कर उसके कंठ में धागा पिरोकर माला बना दे और मुरझाते ही झाड़कर उसे गली में फेंक दे?

वह भय से थरथराने लगा। ज़ोर से चिल्लाते हुए उसने आँखें खोलीं तो सुना कि पेड़ पर बैठा एक कबूतर अपने पंख फड़फड़ा रहा है। गोपी ने तुरंत योगी से कहा "स्वामी, मुझे फूल का जन्म नहीं चाहिये। पक्षी का जन्म चाहिये।"

योगी ने कहा 'तथास्तु'।

दूसरे ही क्षण गोपी पक्षी बन गया। वह उड़ा और एक पेड़ पर जा बैठा। एक शिकारी ने उसे देखा और उसपर बाण चलाया। पर निशाना छूट गया, जिससे बाण एक टहनी पर जा गिरा। गोपी इस बार और ज़ोर से चिल्लाता हुआ बोला "स्वामी, मुझे पक्षी का जन्म नहीं चाहिये। यह जन्म तो ख़तरों से भरा है। किसी भी क्षण मारा जा सकता हूँ। मुझे बकरी या भेड़ का जन्म दीजिये। हरी-भरी घास चरूँगा और मज़े से ज़िन्दगी गुज़ारूँगा।"

योगी ने प्यार से उसके कंधे को छूते हुए कहा "पुत्र, अगर तुमने बकरी या भेड़ का जन्म लिया तो क्या कसाई तुम्हें सुखी जीवन बिताने देगा?" यह सुनते ही गोपी योगी के पैरों पर गिरा और कहने लगा "मैं, मनुष्य बनकर ही जीवन बिताऊँ।"

योगी ने संतुष्ट होकर सिर हिलाते हुए कहा "पुत्र, मैंने तुम्हें न ही फूल का जन्म दिया और न कबूतर का। ऐसा जन्म देने की शक्ति भी मुझमें नहीं है। किन्तु मैंने तो इतना ही किया कि उन सभी जन्मों की अनुभूति एक क्षण भर के लिए तुम्हें हो जाए। अब ही सही, जीवन की वास्तविकता को समझो और उसके प्रति तुम्हारा दृष्टिकोण भी वास्तविक हो। जी लगाकर तरह-तरह के उपायों से अपनी पत्नी को सुधारने की कोशिश करो। मुझे विश्वास है कि तुम उसे सुधार भी सकते हो। कहीं नौकरी ढूँढ़ों और श्रद्धापूर्वक निष्ठा से अपना काम करो। तब तुम्हारा जीवन सार्थक होगा और इस जीवन के प्रति तुम्हारी अभिरुचि बनी रहेगी।"

समुद्रतट की सैर – ४
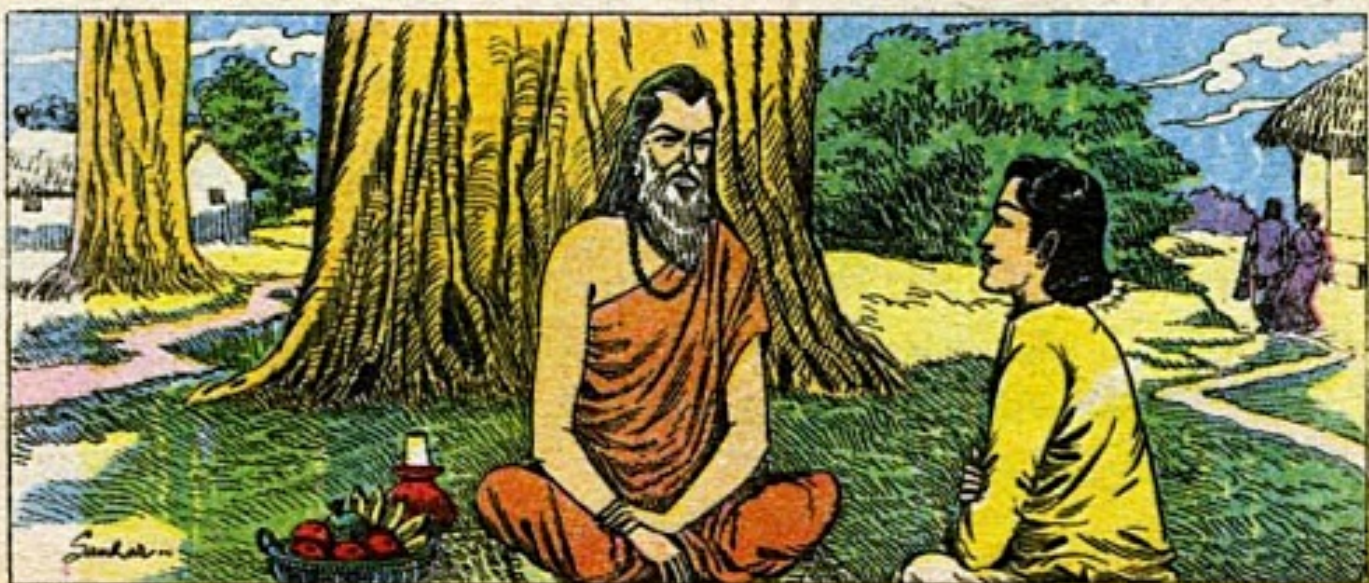
महानगरी बंबई

आलेख : मीरा नायर

चित्र : गौतम सेन

राजा चार्ल्स द्वितीय

राजकुमारी कैथरीन दा ब्रागान्ज़ा

भारत के पश्चिमी तट पर बसी महाराष्ट्र की यह राजधानी दरअसल सात छोटे द्वीपों का समूह है. आज से करीब पांच सौ साल पहले जब पुर्तगाली नाविक उन टापुओं पर पहुंचे, तब वहां मच्छीमारों के छोटे-छोटे गांव थे. सन १६६१ में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय से पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन दा ब्रागान्ज़ा की शादी के अवसर पर पुर्तगाल के राजा ने उनमें से मुंबई नाम का एक द्वीप चार्ल्स द्वितीय को दे दिया. धीरे-धीरे बाकी छह गांव भी ब्रिटेन को मिल गये. अंग्रेजों ने उन्हें पुलों और सड़कों के जरिये जोड़ कर वर्तमान बंबई की नींव रखी. आज वह एक महानगर बन गया है और देश की व्यापारिक तथा फिल्म राजधानी है.

बंबई का समुद्री किनारा ६४ किलोमीटर लंबा है. सबसे उत्तर-पश्चिम छोर पर बसा है मच्छीमारों का गांव, **वेसावे या वरसोवा**. आज भी वहां बंबई के मूल निवासी, **कोली** जाति के लोग मछलियां पकड़ते और सुखाते हैं. पुरुष मछलियां पकड़ते हैं और स्त्रियां उन्हें बाजार में बेचती हैं. एक मछली का तो नाम ही पड़ गया है **बांबे डक**. वैसे स्थानीय भाषा मराठी में उसे **बोंबिल** कहते हैं.

वरसोवा से कुछ किलोमीटर दक्षिण में आइए तो आप पहुंचेंगे सुप्रसिद्ध **जुहू** तट पर, जो सैलानियों का प्रिय स्थान है. अरब सागर की उठती-गिरती लहरें, हवा के मंद-मंद झोंके चित्त को प्रसन्न कर देते हैं. शाम के वक्त तरह-तरह की खाद्य वस्तुओं की रेड़ियां सैलानियों की भूख शांत करती हैं.

जुहू में शौकिया विमान-चालकों के लिए एक छोटा हवाई अड्डा भी है. १९३२ में जे.आर.डी. टाटा ने अपना **पुस मॉथ** विमान इसी हवाई अड्डे पर उतारा था. करांची से बंबई की वह उड़ान देश की प्रथम व्यापारिक उड़ान थी. टाटा विमान सेवा का नाम बाद में **एयर इंडिया** पड़ा.

बंबई के सात टापू

जमशेदजी टाटा

टाटा का विमान पुस मॉथ

लगभग समुद्र के किनारे, बांद्रे या बांदरा उपनगर की एक पहाड़ी पर माउंट मेरी का गिरजाघर है, जिसे पुर्तगालियों ने १६४० में बनवाया था. हर साल सितंबर में वहां मेला लगता है. शहर के हर कोने से मां मरियम के भक्त वहां उमड़ पड़ते हैं.

और वरली की हाजी अली दरगाह तो समुद्र के बीच ही एक चट्टान पर बनी है. पीर अली हजरत बुखारी की कब्र पर बनी दरगाह ८०० बरस पुरानी है. हजरत अली संपन्न व्यापारी थे. लेकिन एक बार हज-यात्रा पर निकलते वक्त उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बांट दी और यात्रा के बाद आ कर समुद्र की इस छोटी-सी चट्टान पर बस गये. उनके निधन के बाद उनका शव वहीं दफनाया गया और उनके भक्तों ने दरगाह का निर्माण करवाया. दरगाह पहुंचने के लिए पुल है. वह ज्वार के समय पानी में डूब जाता है और मार्ग बंद हो जाता है. केवल भाटे के समय ही रास्ता खुला रहता है.
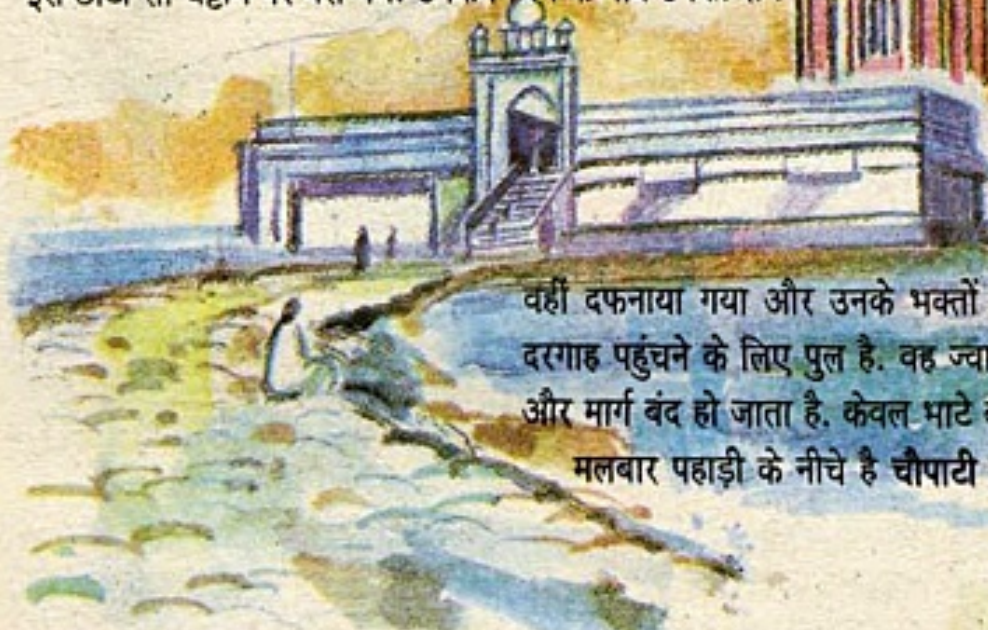
मलबार पहाड़ी के नीचे है चौपाटी का ऐतिहासिक तट, जहां शाम को हजारों लोग हवाखोरी करने या बंबई की खास चाट भेल-पूरी का स्वाद लेने आते हैं. एक मान्यता के अनुसार, सन १८९५ में यानी राइट-बंधुओं की प्रथम उड़ान से करीब आठ साल पहले, शिवकर बापूजी तलपदे नाम के वैदिक विद्वान ने अपना ही बनाया हुआ विमान चौपाटी पर समुद्र के ऊपर उड़ाया था.

चौपाटी का नाम लेते ही हमें याद आते हैं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जिन्होंने देश को 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का मंत्र दिया. उनका दाह-संस्कार चौपाटी तट पर हुआ था और आज वहां उनकी कांसे की भव्य मूर्ति स्थापित है. तिलक ने ही गणेशोत्सव को सार्वजनिक उत्सव बनाने की प्रेरणा दी थी. गणेशोत्सव के दिनों में चौपाटी की चहल-पहल चौगुनी हो जाती है. गणेशजी की छोटी-बड़ी मूर्तियां गणपति बप्पा मोरया के नारों के बीच समुद्र में विसर्जित की जाती हैं.

माउंट मेरी का गिरजाघर

हाजी अली दरगाह

विसर्जन के पहले गणपति का जलूस

बंबई नगर में सब धर्मों, जातियों व वर्गों के लोग बसते हैं. अनेक विदेशियों ने भी इसे अपना घर बना लिया है. इसलिए यहां सभी धर्मों के प्रार्थनास्थल मौजूद हैं. नगर के मझगांव मुहल्ले में बंबई के लगभग ३,००० चीनी नागरिकों के लिए १८० बरस पुराना चीनी देवालय है. शहर में एक जापानी मंदिर और कई यहूदी सिनैगॉग भी हैं. पारसियों की अनेक अगियारियां (अग्नि-मंदिर) तो हैं ही.

हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम में बंबई की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. १८८५ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन यहीं हुआ था. ८ अगस्त १९४२ को 'अंग्रेजो, भारत छोड़ो' आंदोलन भी बंबई में ही शुरू हुआ था. इन दोनों घटनाओं से जुड़े स्थान गवालिया टैंक पर हैं.

बंबई के स्टाक एक्सचेंज (सट्टा बाजार) से देश का निजी व्यापार-क्षेत्र संचालित होता है. यह देश का सबसे पुराना स्टाक एक्सचेंज है, जिसे १८५० में छह दलालों ने बरगद के एक पेड़ के नीचे बैठ कर आरंभ किया था. दलाल स्ट्रीट की गगनचुंबी इमारत १९७७ में बनायी गयी.

अब चलें शहर के पूर्वी समुद्रतट पर. पत्तन की सभी गोदियां (डॉक) उसी ओर स्थित हैं. ससून डॉक, प्रिंसेस डॉक, अलेक्जैंड्रा, इंदिरा (विक्टोरिया) गोदी, १८७० और १९७५ के बीच बनाये गये. बंबई पत्तन पर जहाजों की भीड़ घटाने के लिए एक आधुनिक पत्तन अब बनाया गया है. वह है न्हावा-शेवा टापुओं पर बना जवाहरलाल नेहरू पत्तन. यह वर्तमान गोदियों से करीब ११ किलोमीटर दूर है.

१४ अप्रैल १९४४ को बंबई बंदरगाह में बड़ा जोरदार धमाका हुआ, जो दूर-दूर तक सुनाई दिया. घरों के कांच टूट गये. कुछ घरों में सोने के छड़ और बिस्कुट आ गिरे. दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था. लोग समझे कि जापानी बमवर्षक आ पहुंचे. लेकिन वह धमाका हुआ था ब्रिटिश जहाज एस.एस. स्टाइकिन पर. जहाज करांची से आया था और उस पर भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ लदे हुए थे. माल में ढेर सारा कपास था और करोड़ों रुपयों का सोना भी. जहाज में अचानक आग लग गयी और बारूद फट पड़ी. फिर क्या था ! एक जहाज से दूसरे जहाज ने आग पकड़ी और समुद्र में खड़े अन्य ५४ जहाज भी जल कर स्वाहा हो गये. आग बुझाने के लिए दमकल के २४ इंजनों की जरूरत पड़ी. करीब १०,००० मजदूरों ने छह महीने तक मलबा हटाने का काम किया. बहुत लोग मारे गये या घायल हुए.

बंबई का बहुभाषी,
बहुधर्मी समाज

इस महानगर को सपनों की नगरी और भारत का हालीवुड कहा जाता है. देश का सबसे बड़ा सिनेमा उद्योग यहीं पर है न !

७ जुलाई १८९६ को शहर के वाटसन होटल में देश में पहली बार एक फिल्म दिखायी गयी थी. यह स्थान अब एसप्लेनेड बिल्डिंग का एक हिस्सा है. गोरेगांव उपनगर में कई एकड़ भूमि पर फिल्मसिटी बनायी गयी है, वहां हर प्रकार के सेट स्थायी रूप से बने हैं. उन पर सारे साल फिल्मों की शूटिंग होती है.

बंबई के दक्षिणी छोर पर नौसेना संस्थान भा. नौ. पो. आंग्रे के अहाते में ४०० साल पुरानी धूपघड़ी है. घड़ी पर कुछ मनुष्यों और जानवरों की अटपटी आकृतियां उकेरी गयी हैं. तीन मीटर ऊंची इस घड़ी का मुंह समुद्र की ओर है. इसका निर्माण पुर्तगालियों ने इस उद्देश्य से करवाया था कि बंदरगाह में आनेवाले जहाज अपने प्रवेश का समय जान सकें.

४०० वर्ष पुरानी धूपघड़ी –

दक्षिणी छोर पर ही बना है बंबई का सबसे परिचित स्मारक गेटवे ऑफ इंडिया. यह पीले बैसाल्ट पत्थर का मेहराबदार द्वार है और एकदम समुद्र के कगार पर बना है. हुआ ऐसा कि १९११ में ब्रिटेन के सम्राट जार्ज पंचम और रानी मेरी भारत पधारे. वे भारत आनेवाले प्रथम ब्रिटिश राजदंपति थे. उनके स्वागत के लिए ताबड़तोड़ प्लास्टर ऑफ पेरिस का द्वार समुद्रतट पर बनाया गया. बाद में १९२७ में उसी स्थान पर वर्तमान गेटवे का निर्माण किया गया.

भारत के आजाद होने पर अंग्रेजी सैनिकों का आखिरी दस्ता गेटवे ऑफ इंडिया से ही जहाज पर चढ़ कर ब्रिटेन रवाना हुआ.
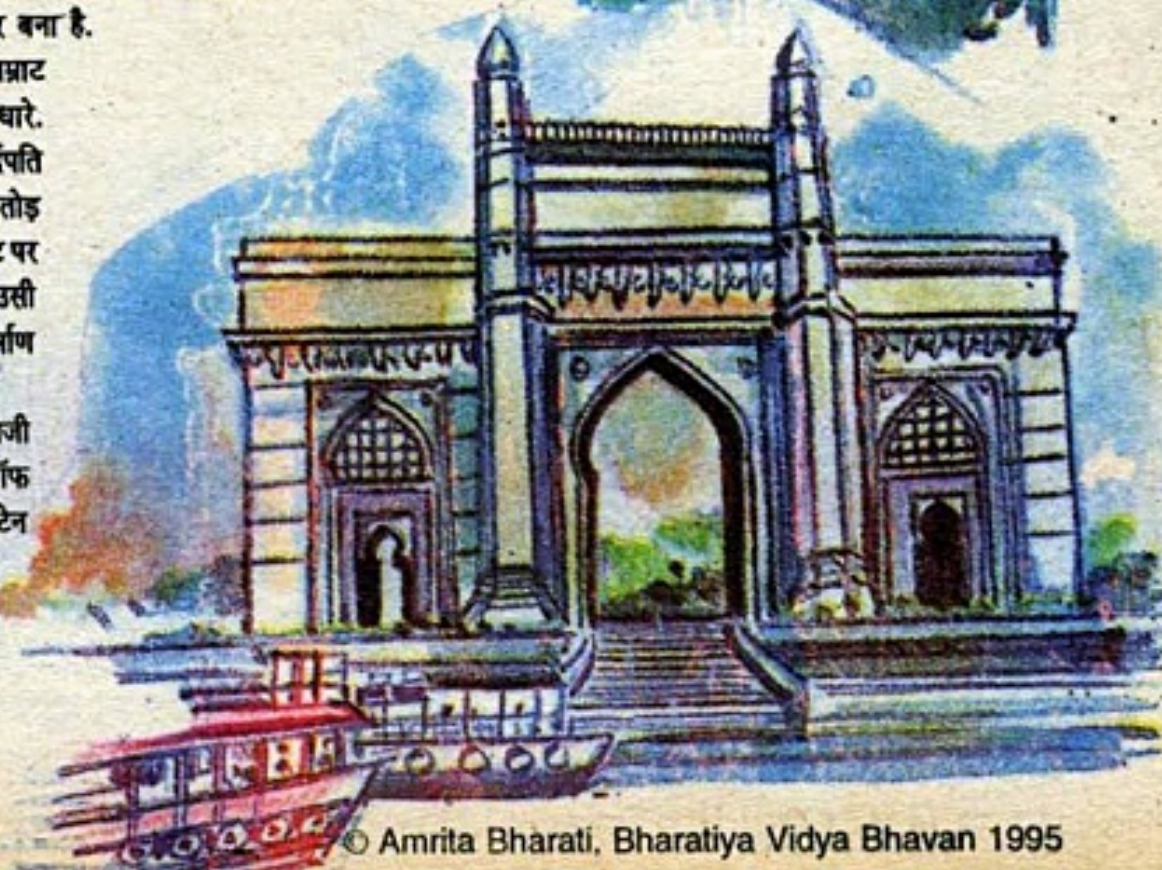
गेटवे ऑफ इंडिया

कमीज़ हज़ार रुपयों की

ब्रह्मा और भोगी रहते थे जामनगर में। दोनों मेहनत की कमायी खाते थे। एक बार वहाँ अकाल पड़ा। वे दोनों बेकार हो गये। काम ढूँढने वे दोनों शहर पहुँचे। समय ने वहाँ उनका साथ दिया, जिससे उन्होंने धन भी कमाया।

तब ब्रह्मा को लगा कि अपना गाँव जाऊँ और अपना वैभव दिखाऊँ। भोगी से पूछा तो वह भी साथ आने के लिए तैयार हो गया।

ब्रह्मा ने कहा "खाली हाथ जाना अच्छा नहीं होगा। जाने-पहचाने लोगों के लिए कोई भेंट ले जाएँ तो अच्छा होगा।"

भोगी ने 'हाँ' कहा। दोनों मिलकर शहर की हाट में गये।

जामनगर में ब्रह्मा के दस दोस्त हैं। इसलिए उसने उनके लिए दस प्रकार की भेंटें खरीदीं। सौ रुपये लगे। भोगी ने ऐसी कोई चीज़ नहीं खरीदी। उसने कहा "तुमने तो छोटी-छोटी चीज़ें खरीदीं। शहर में हमारा ओहदा क्या है, अगर उन्हें जताना है तो हमें बड़ी-बड़ी और क़ीमती चीज़ें ले जानी चाहिए।"

ब्रह्मा ने फट से कह दिया "मैंने जो चीज़ें खरीदीं, उनसे मेरी औक़ात मालूम हो जाती है। इससे अधिक क़ीमती चीज़ें मैं नहीं खरीद सकता हूँ।"

दोनों दोस्त थोड़ी देर तक हाट में घूमते रहे। तब उन्होंने एक व्यापारी को चिल्लाते हुए देखा। वह व्यापारी चिल्ला रहा था "बाप रे, इतने बड़े शहर में मेरा माल खरीदनेवाला धनी कोई नहीं है?"

भोगी ने व्यापारी से कहा कि अपना माल दिखाओ। व्यापारी ने एक कमीज़ दिखायी और कहा "यह कपड़ा चीन से आया है। इसको छुओ तो ऐसा लगेगा, जैसे रेशमी गद्दों को छू लिया। अरब देश के

राज पुरोहित
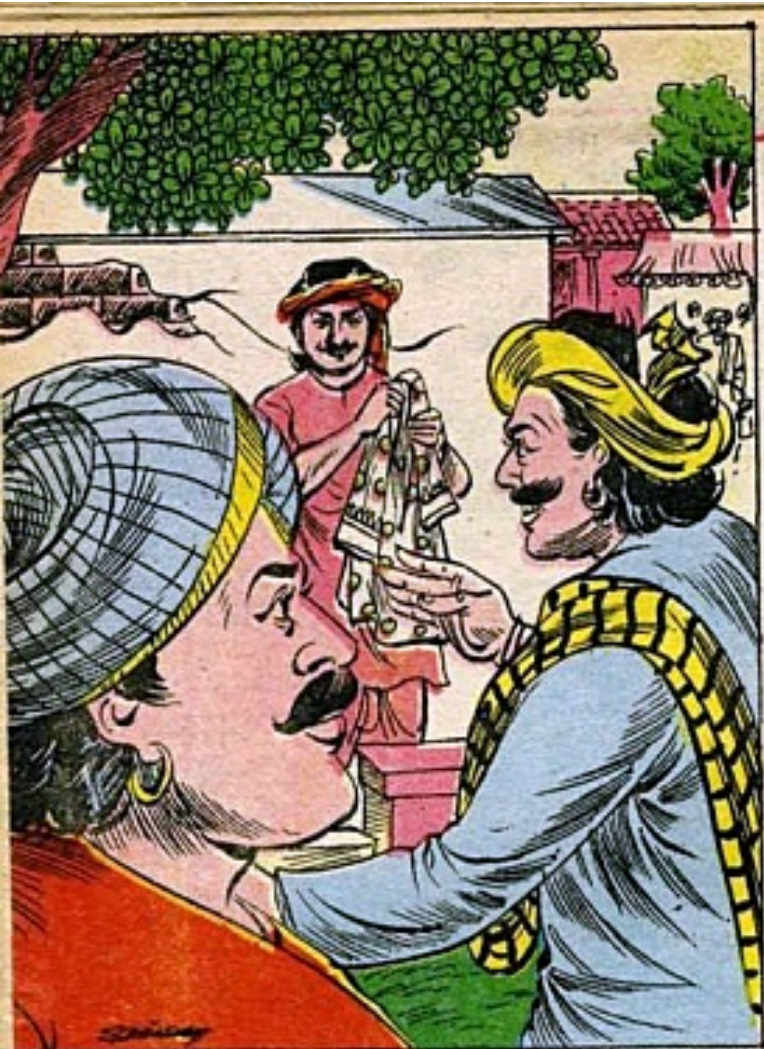
दर्ज़ी ने इसे सीने में अपना पूरा हुनर दिखाया है। इसपर फूलों के जो चित्र हैं, वो चाँदी और सोने के धागों से सिये गये हैं। कहीं-कहीं मोती भी हैं इस कमीज में। इसकी क़ीमत वैसे तो दस हजार रुपये हैं, पर मैं बेच रहा हूँ, सिर्फ़ हजार रुपयों में।''

''कमीज़ हज़ार रुपयों की ! आराम से दिन काटनेवाले किसी अमीर को दिखाओ, वह शायद खरीदे। ऐसी चीज़ें हाट में मत लाना'' ब्रह्मा ने कहा।

पर भोगी ने उसका सौदा करना चाहा। व्यापारी एक हज़ार से कम दाम पर किसी भी हालत में कमीज़ देने को तैयार नहीं था। भोगी ने अपने पास जो रक़म थी, गिनती की तो नौ सौ रुपये ही थे। ब्रह्मा से उसने सौ रुपये उधार लिये और कमीज़ खरीद ली।

''इतनी क़ीमती कमीज़ आख़िर किसके लिए खरीद रहे हो? क्या ग्रामाधिकारी को भेंट में देना चाहते हो? ज़रा याद करो, क्या कभी उसने हमारी मदद की? अगर किसी और को भी देना चाहोगे तो भी उसे पहनने की हैसियत किसे है?'' ब्रह्मा ने आश्चर्य भरे स्वर में कहा।

भोगी ने मुस्कुराकर कहा ''मैं कोई बेवकूफ़ नहीं हूँ कि परायों के लिए हज़ार रुपये ख़र्च करूँ। इस कमीज़ को पहनकर जब मैं अपने पूरे गाँव में घूमने लगूँगा तो उन्हें मेरी औक़ात मालूम हो जायेगी। वे एकदम हक्का-बक्का रह जाएँगे।''

''अपनी हैसियत दिखाने के लिए हज़ार रुपये लगा रहे हो? इसे पहनने से आख़िर तुम्हें ऐसी क्या ख़ास खुशी मिलेगी ? हाँ, यह याद दिलाने के लिए उपयोग में आयेगी कि इसपर इतना ख़र्च हो गया'' ब्रह्मा ने समझाने की कोशिश की।

''ब्रह्मा, तुम्हें सुख भोगना नहीं आता। दूसरों के लिए जो भी ख़र्च करो, वह बेकार है, क्योंकि उससे वे कभी तृप्त नहीं होते। इससे तुम्हारा गौरव भी नहीं बढ़ता। अपने लिए अपना धन ख़र्च करोगे तो उससे औक़ात बढ़ती है। सब तेरा आदर करेंगे। यह सिद्धांत याद रखो तो तुम्हारा भला होगा।''

भोगी ने ब्रह्मा को उपदेश दिया। जो भी हो, वे दोनों निश्चित दिन गाँव निकल पड़े। गाँव में प्रवेश करने के लिए सरहद के तालाब के पास भोगी स्नान करने के लिए रुक गया। उसने कहा कि स्नान करने के बाद हज़ार रुपयों की कमीज़ पहनूँगा और गाँव में क़दम रखूँगा।

ब्रह्मा तो तुरंत गाँव चला गया और उन सबके घर जाकर उन्हें भेंटें दीं, जिन्हें वह जानता था। सबने उसका आदर-सत्कार किया और भोगी के बारे में पूछ-ताछ की।

ब्रह्मा ने कहा "भोगी की शान क्या कहूँ। वह तो हमारे गाँव में घूमने के लिए हज़ार रुपयों की कमीज़ पहनकर आनेवाला है।"

भोगी के आने की ख़बर सुनकर कुछ लोग उससे मिलने गाँव की सरहद पर गये। तब तक वह नहा चुका था। नया कुर्ता भी पहन चुका था।

गाँववालों ने भोगी को घेर लिया और कहा "ब्रह्मा ने हमें बता दिया था कि तुमने हज़ार रुपयों की कमीज़ ख़रीदी है। हम देखना चाहते हैं कि इतनी क़ीमती कमीज़ कैसी होगी? एक बार हमें भी दिखाना।"

भोगी का चेहरा फीका पड़ गया। उसने अपनी कमीज़ दिखाते हुए कहा "देख रहे हो ना। वही कमीज़ तो मैंने पहन रखी है।"

गाँववालों ने उस कमीज़ को ग़ौर से देखा। उनमें से एक ने कहा "हमने सुना था कि शहरी धोखेबाज़ होते हैं। यह कमीज़ हज़ार रुपयों की है? भोगी, देखने में तो यह बिलकुल
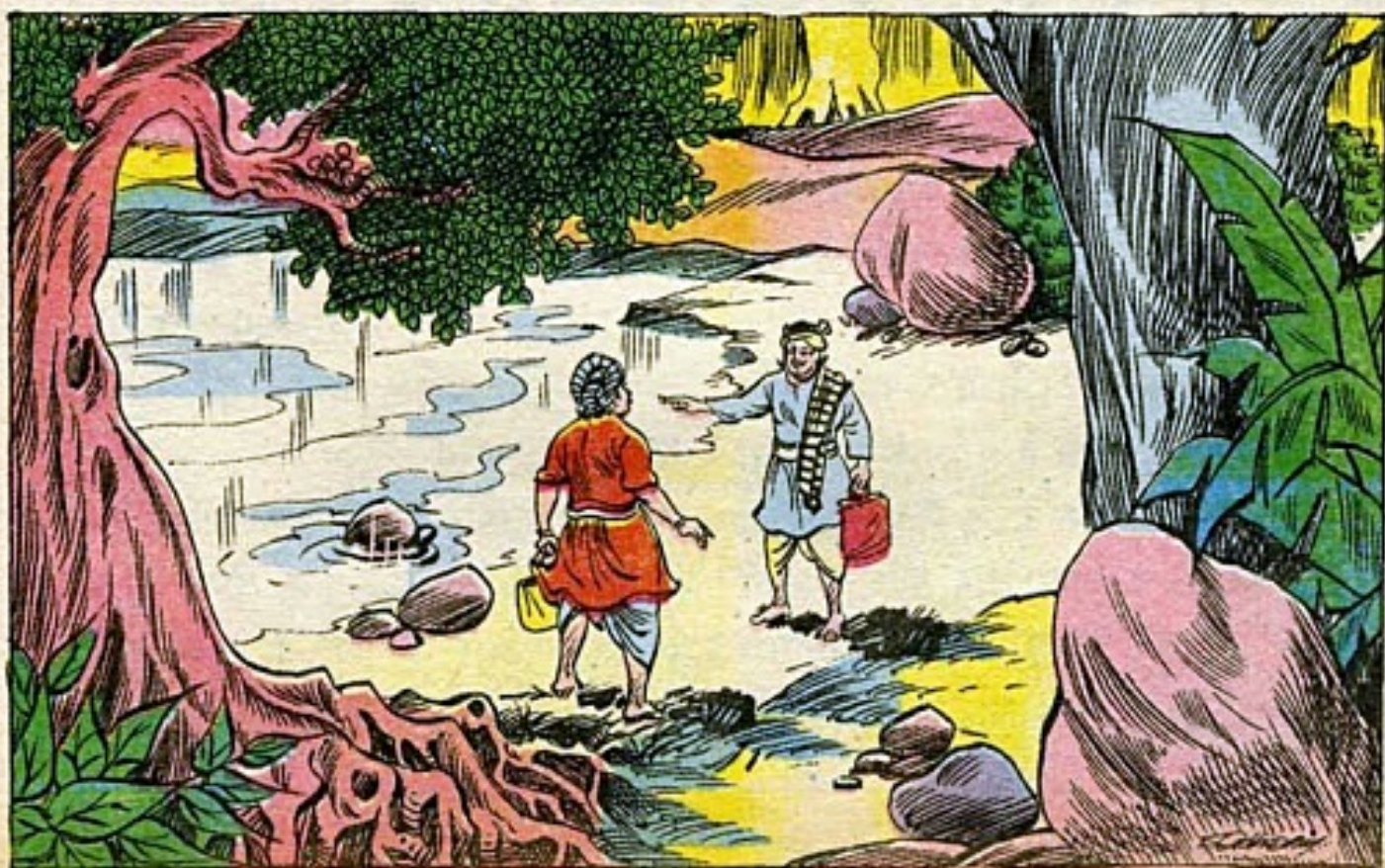
मामूली लग रही है। तुम कहोगे कि मैं झूठ बोल रहा हूँ तो मुझे तसल्ली होगी। ऐसी कमीज़ के लिए हमारा ग्रामवासी हज़ार रुपये ख़र्च कर दे, ये मेरी बर्दाश्त के बाहर है।''

भोगी को अंदर ही अंदर दुख हो रहा था, पर उसने गंभीर होकर कहा ''चाँदी और सोने के इन धागों को देखो।'' लेकिन गाँववालों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उल्टे वे कहने लगे ''देखने में ये सफ़ेद और पीले रंग के धागे लगते हैं। तुम जिन्हें मोती कह रहे हो वे काँच के टुकड़े हैं। समझ लो कि सचमुच ही ये चाँदी और सोने के धागे हैं, इनमें मोती भी जड़े हैं, पर क्या फ़ायदा। जब तक तुम दूसरों को नहीं बताओगे तब तक उन्हें मालूम ही नहीं होगा कि आख़िर ये क्या हैं? ऐसी कमीज़ तो सौ रुपयों में सिल सकती है। कम से कम अब मान जाओ कि तुम ठग लिये गये हो।''

तब भोगी उनके साथ गाँव में गया और ब्रह्मा की गवाही पूछी। जब ब्रह्मा ने कहा कि सचमुच उस कमीज़ की क़ीमत हज़ार रुपये हैं तो सबने एक होकर पूछा ''तुम साथ रहे और भोगी को नुक़सान पहुँचते हुए देखते रहे? एक गाँव के रहनेवाले हो। एक ही गाँव के लोग होकर क्या ऐसा करना उचित है। लगता है, शहर जाकर तुम दोनों बहुत बदल गये। तुम हमारे लिये भेंटें लाये, अच्छा किया, पर अपने दोस्त को धोखा खाते हुए देखकर भी तुम चुप रह गये?''

भोगी ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि इसमें ब्रह्मा की कोई ग़लती नहीं है। कमीज़ मैंने ही ख़रीदी थी। उसने आगे कहा ''पहले ही आपको कमीज़ के बारे में मालूम हो गया था, इसलिए आपने बहुत कुछ कल्पना कर ली। उस कमीज़ को देखने पर आप निराश हो गये। जो इसके बारे में कुछ नहीं जानते वो इस कमीज़ को देखने पर बेहोश हो जाएँगे।''

भोगी कमीज़ को पहनकर गाँव में कितने ही लोगों से मिला। कुछ लोगों ने उसके चप्पलों के बारे में पूछा तो कुछ लोगों ने उसके हाथ की घड़ी के बारे में पूछा। कुछ

ने ताना कसा कि शहर जाने के बाद उसका रवैय्या ही बदल गया है। कुछ ने उसकी मूँछ की बराबरी ज़मींदार के बड़े बेटे की मूँछ से की। परंतु किसी ने भी उसकी कमीज़ के बारे में पूछा तक नहीं। उससे रहा नहीं गया तो उसीने एक-दो से पूछा कि कमीज़ कैसी है तो उन्होंने बड़ी ही लापरवाही से जवाब दिया "ठीक है, कोई ख़ास अच्छी नहीं है।"

दो दिन गाँव में रहने के बाद दोनों दोस्त लौट पड़े। दोनों को जो लोग जानते थे, उनमें से कुछ लोगों ने ब्रह्मा को सलाह दी कि भोगी का ख्याल रखना। फिर उन्होंने ही भोगी से कहा "देखो, मेहनत की कमायी यों ही ख़र्च न करना। ब्रह्मा अक़्लमंद है। उसकी सलाह लेना और सुधरना।"

रास्ते में भोगी ने कहा "हमारे गाँव के लोग स्वार्थी हैं। तुम उनके लिए भेंट ले आये थे, इसलिए उन्होंने तुम्हारी तारीफ़ के पुल बाँधे। मैंने जो ख़र्च किया, वह अपने लिए ही किया था, इसीलिए उन्होंने मेरा अपमान किया। मैं इस गाँव में आगे कभी भी क़दम नहीं रखूँगा।"

ब्रह्मा हँसता हुआ बोला "तुम्हें तो अपने ही बारे में नहीं मालूम, तो गाँववालों को क्या जान पाओगे। क्या तुमने हज़ार रुपयों की कमीज़ अपने लिए ख़रीदी थी? नहीं, दूसरों की तारीफ़ सुनने के लिए ख़रीदी थी। अगर अपने लिए ही ख़रीदते तो उसे पहनकर खुश होते। जब दूसरों ने उसका मूल्य आँकने में ग़लती नहीं की तो तुम उनपर नाराज़ हो रहे हो, इसे अपना अपमान समझ रहे हो। हज़ार रुपयों की कमीज़ पहनकर दूसरों की तारीफ़ सुनने से अच्छा तो यही होता कि उनके लिए छोटी-सी भेंट ले आते और उनकी तारीफ़ सुनते। तुम जिस प्रशंसा को पाने के लिए उतावले हो रहे थे, वह आसानी से मिल जाती। तुम्हीं सोचो, दूसरों के लिए तुमने कुछ नहीं किया उल्टे उन्हें स्वार्थी कह रहे हो।" भोगी को अपनी ग़लती मालूम हो गयी। तब से उसने दिखावे का ढोंग छोड़ दिया और सीख लिया कि मित्रता कैसे निभायी जा सकती है।

युद्ध नहीं

कमलपुर के राजा कमलध्वज का पुत्र था, शूरध्वज। शालिनी नामक उसकी एक पुत्री भी थी। जैसा नाम था, वैसा ही शूर-वीर था शूरध्वज। वह समस्त विद्याओं में प्रवीण था। अनेकों युद्धों में आगे खड़े होकर उसने कितने ही युद्ध जीते। वह जानता ही नहीं था कि हार क्या होती है। उसका नाम लेते ही शत्रु भय से काँपते थे।

कमलध्वज ने, अपने पुत्र शूरध्वज को युवराज बनाया और स्वयं नाम मात्र के लिए राजा बना रहा। राज्यभार पुत्र को पूर्ण रूप से सौंप दिया। शालिनी अब जवान हो गयी थी। राजा उसके लिए योग्य पति की खोज में था। यह बात जानकर शूरध्वज ने अपने पिता से कहा "मेरी बहन की शादी किसी महावीर योद्धा से ही होगी। मुझे जो जीतेगा, उसीसे उसकी शादी करवायेंगे।"

"तुम्हारा विचार अच्छा है। पर यह मुक़ाबला तुमसे नहीं, बल्कि किसी और वीर से होगा।" राजा ने कहा।

शूरध्वज पिता से सहमत नहीं हुआ। उसने हठ किया कि शालिनी से शादी करनेवाले को उसे ही जीतना होगा। उसने ऐसी घोषणा भी करवा दी।

थोड़े समय तक कोई राजकुमार आगे नहीं आया। उन्हें विश्वास नहीं था कि वे शूरध्वज को जीत पायेंगे।

पर आख़िर श्यामल देश का राजकुमार वायुवर्मा शूरध्वज को पराजित करके, शालिनी से विवाह करने आया।

राजा को लगा कि वायुवर्मा हर तरह से शालिनी का योग्य पति है। शालिनी भी उसे अपना पति बनाने के लिए तैयार हो गयी। पर शर्त थी कि इसके लिए पहले शूरध्वज को हराना होगा। यह युद्ध होना ही चाहिये, इसलिए एक शुभ मुहूर्त निकाला

गया। वायुवर्मा के रहने का प्रबंध राजभवन में किया गया क्योंकि युद्ध के लिए अभी समय बाक़ी है।

किन्तु यद्ध के एक दिन पहले एक दुर्घटना घटी। राजकुमारी शालिनी जब अपने उद्यानवन में टहल रही थी तब कुछ बदमाशों ने उसका अपहरण किया और उसे उठाकर ले गये।

शूरध्वज ने वायुवर्मा को बुलवाकर उससे कहा "कुछ दुष्टों ने मेरी बहन का अपहरण किया है मैं उसे ढूँढ़कर ले आने निकल रहा हूँ। हमारा युद्ध बाद में होगा।"

"उसे ढूँढ़ने के लिए मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा। उन दुष्टों को मारकर ही रहूँगा।" वायुवर्मा ने कहा।

दोनों हथियारों सहित निकल पड़े। पहले वे उद्यानवन में गये। वहाँ ग़ौर से देखने पर उन्हें मालूम हो गया कि बदमाश शालिनी को किस ओर ले गये हैं। अक़्लमंद शालिनी ने बटोरे हुए फूलों को रास्ते में बिखरा दिया था। दोनों उसी रास्ते पर चलते गये और चलते-चलते नगर से बहुत दूर पेड़ के नीचे एक योगी को बैठे देखा।

उस पेड़ के आगे के रास्ते में फूल नहीं थे। हो सकता है कि शालिनी के फूल ख़तम हो गये हों। इसलिए दोनों युवक योगी के पास लौट आये और उससे पूछा "योगिवर, क्या एक स्त्री को ज़बरदस्ती कोई इस तरफ़
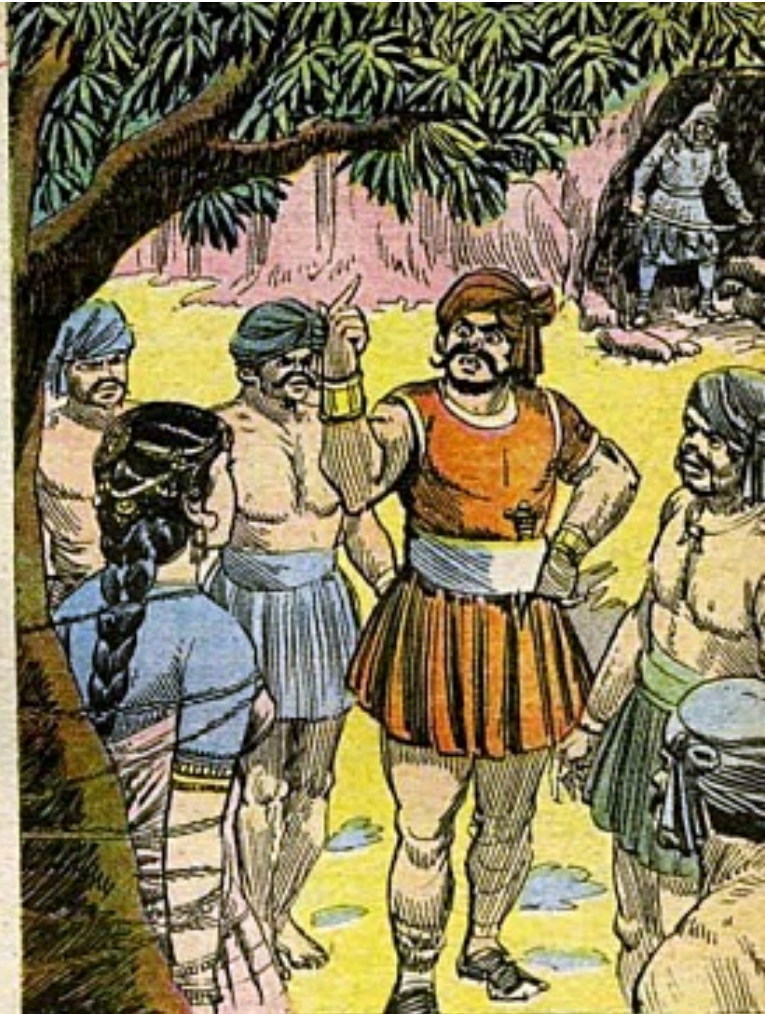
से ले गया?"

"हाँ, मैंने देखा कि चार बलवान एक स्त्री को उठाकर जा रहे थे। मैंने उन्हें समझाया, पर उन्होंने मेरी बात नहीं मानी, और जंगल के मार्ग की ओर चले गये।" योगी ने कहा।

जंगल का वह रास्ता उन्हें सीधे एक गुफ़ा की ओर ले गया। गुफा के द्वार से थोड़ी दूरी पर एक फूल दिखायी पड़ा। वायुवर्मा ने कहा "दुष्टों ने शालिनी को गुफ़ा में छिपा रखा है। मैं जाकर उसे छुड़ा लाता हूँ।"

"नहीं नहीं, तुम यहीं रहो। मैं छुड़ाकर लाता हूँ।" कहते हुए शूरध्वज ने म्यान से तलवार निकाली और अंदर गया।

जैसे ही वह अंदर गया, एक चट्टान से गुफ़ा का मुखद्वार बंद हो गया।

गुफ़ा के बाहर खड़े वायुवर्मा को स्त्री का आर्तनाद सुनायी पड़ा। जिस दिशा से वह ध्वनि आयी, वायुवर्मा उसी दिशा की ओर चलता रहा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने देखा कि शालिनी पेड़ से बंधी हुई है और वे चारों बलिष्ठ उसको धमकी दे रहे हैं। उनका प्रधान शालिनी से कह रहा था "पगली, तुम्हें छुड़ाने के लिए जो वीर आये थे, उन्हें मेरे आदमियों ने गुफ़ा में बंद कर दिया। अब तो तुम्हें मुझसे शादी करनी ही होगी। तुम्हारी रक्षा अब कोई नहीं कर सकता।"

वायुवर्मा पल भर में तलवार लेकर उस प्रधान पर टूट पड़ा। चारों ने एक होकर उसका सामना किया। थोड़ी देर तक वे अपनी रक्षा करते रहे और जब उन्हें मालूम हो गया कि वायुवर्मा से बचना मुश्किल है, तो जंगल की ओर भाग निकले। वायुवर्मा ने शालिनी को मुक्त किया और उसे लेकर गुफ़ा के पास लौटा, जहाँ शूरध्वज बंदी था।

भाग्यवश उस समय कुछ अरण्यवासी वहाँ आये। उन्होंने गुफ़ाद्वार से पत्थर को हटाया और अंदर बंद शूरध्वज को बचा लिया।

शूरध्वज और वायुवर्मा, शालिनी को लेकर राजभवन आये। राजा ने पुरोहित को बुलाया और उसे आदेश दिया कि शालिनी और वायुवर्मा के विवाह का मुहूर्त निकाला जाए। तब शूरध्वज ने कहा "मुझे युद्ध में जीतने के बाद ही यह विवाह हो सकता है। शालिनी को अगर लुटेरे उठाकर ना ले जाते तो आज हम दोनों के बीच युद्ध होता।"

"तुम्हारा युद्ध आज हो गया। मुझे छुड़ाने के लिए उसने तुम्हारा मुक़ाबला किया और जीत भी गया। अब और किसी युद्ध की ज़रूरत नहीं है।" शालिनी ने कहा।

शर्म से शूरध्वज ने अपना सिर झुका लिया। उसे नही मालूम था कि शालिनी का अपहरण एक नाटक मात्र था और यह नाटक राजा और शालिनी ने मिलकर खेला था।

नारद के प्रस्थान के बाद धर्मराज ने अपने भाइयों से राजसूय यज्ञ के बारे में चर्चाएँ की । एक तरफ़ इस बात का डर था कि राजसूय यज्ञ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ तो युद्ध छिड़ेगा और उसमें असंख्य लोग मारे जाएँगे । तो दूसरी तरफ़ उसे यह आशा आकर्षित कर रही थी कि यह यज्ञ करने से दिव्यलोकों की प्राप्ति होगी । आख़िर जो भी हो, धर्मराज ने निर्णय किया कि राजसूय यज्ञ किया जाए ।

यह निर्णय धर्मराज के लिए एक प्रबल निर्णय बन गया । सदा इसी के बारे में सोचने लगा । सभा में इस दिशा में उसके किये गये प्रबंधों व प्रयत्नों के बारे में कहते जाने लगा । मंत्रियों से वह पूछा करता था कि उसमें राजसूय यज्ञ करने की योग्यता है या नहीं?

"राजन्, आपको राजसूय यज्ञ करने की योग्यता है । उसे विजयपूर्वक समाप्त करके आप साम्राज्य-भार को संभालेंगे ।" मंत्रियों ने कहा ।

मंत्रियों ने भी कह दिया, इसलिए उसने अपने निर्णय को और दृढ़ कर लिया । 'मेरे बलशाली भाई हैं । शत्रु राजाओं को जीतकर उनसे कर वसूले जा सकते हैं । परिस्थितियाँ अनुकूल हैं ।' वह ऐसा सोचने लगा । युद्ध छिड़ने पर असंख्य लोग मारे जाएँगे, इसपर भी वह सोचने को तैयार नहीं था । पर उसे लगा कि इसके बारे में कृष्ण की राय लेना उचित होगा ।

जरासंध की कथा

फ़ौरन धर्मराज ने कृष्ण को समाचार भेजा। कृष्ण कुछ लोगों के साथ इंद्रप्रस्थ आया। यथावत् आदर-गौरव, कुशल-मंगल की बातें होते ही धर्मराज ने कृष्ण से कहा "कृष्ण, राजसूय यज्ञ करने की मेरी प्रबल इच्छा है। मेरा हित चाहनेवाले सब मुझे प्रोत्साहन दे रहे हैं। किन्तु राजसूय यज्ञ संपन्न करने के लिए बहुत ही शक्ति व सामर्थ्य चाहिये। इसके लिए मेरी अकेली शक्ति पर्याप्त नहीं है। अन्यों की सलाह पूरी तरह से विश्‍वसनीय नहीं हैं। मुझे तुम्हारी सलाह चाहिये। तुम मना करो तो मैं यज्ञ नहीं करूँगा। बताओ, तुम्हारी क्या आज्ञा है?"

कृष्ण ने उत्तर में कहा "धर्मराज, तुम हर तरह से राजसूय यज्ञ करने के योग्य हो। तुम्हें तो सब कुछ मालूम है। इससे पूर्व परशुराम ने क्षत्रिय वंशों का निर्मूलन किया। इलेक्ष्वाक वंश के राजा ही सच्चे क्षत्रिय हैं। कालक्रमानुसार वे एक सौ एक वंशों में पनपे। ययाति, भोज वंश चौदह हो गये। उन सब राजवंशों को पराजित करके जरासंध सम्राट बन गया। वह महाबली है और घमंडी भी। उसे जीतना असाध्य कार्य है। उसका सेनापति है शिशुपाल। पश्चिमी दिशा का राजा भगदत्त तुम्हारे पिता का मित्र है, फिर भी वह जरासंध की सेवाएँ कर रहा है। जरासंध के पक्ष में और कितने ही बलशाली हैं। उस जरासंध से तंग आकर ही हम द्वारका चले गये और वहीं बस गये। जरासंध जब तक जीवित है, तब तक तुम्हारा राजसूय यज्ञ सफल नहीं हो पायेगा। पहले उसे समाप्त करना होगा।"

कृष्ण की बातों को सुनकर धर्मराज थोड़ा ठंडा पड़ गया। उसने कृष्ण से कहा "हर राजा अपनी सुख-सामग्री जुटाने में ही मग्न है। कोई भी साम्राज्य स्थापित करने का उद्देश्य नहीं रखता। उद्देश्य हो भी तो यह कोई सुगम काम नहीं है। मैं भी अपना निश्चय भुला दूँगा। यह सोचकर तृप्त हो जाऊँगा कि भविष्य में मेरे वंश में

कोई ऐसा आयेगा, जो इस यज्ञ को संपन्न करेगा। जब जरासंध का मुक़ाबला तुम्हीं नहीं कर सके, तो हम भला क्या कर पायेंगे, जो तुम्हारे बल पर आधारित हैं, हम उसे कैसे जीत पायेंगे ?''

भीम ने अपने भाई धर्मराज की बात नहीं मानी। उसने कहा ''आरंभ में ही ठंडे पड़ जानेवाले कुछ साध नहीं सकते। अपनी हार माननेवालों को विजयश्री भला कैसे वरेगी ? उपाय बताने के लिए कृष्ण तो है ही। फिर मेरा और अर्जुन का पराक्रम है। बलवान पर विजय पाना ही सच्ची जीत होती है।''

कृष्ण ने कहा कि जरासंध को उपाय से मारा जा सकता है। किन्तु धर्मराज में धैर्य नहीं था। उसने कृष्ण से कहा ''तुम्हें और मेरी दो आँखों के समान मेरे भाई भीम और अर्जुन को, साम्राज्य के लिए जरासंध से लड़ने नहीं भेज सकता। तुम उसे नहीं जीत सकते। लगता है, इससे हानि ही होगी। मुझे राजसूय यज्ञ नहीं करना है।''

अर्जुन ने कहा कि जो प्रयत्न नहीं करता, उसका जन्म व्यर्थ है। उसने कहा कि ये गांडीव, अक्षय तूणीर और यह रथ शत्रु-संहार के लिए नहीं हैं तो किसलिये हैं ?

धर्मराज को जरासंध का वृत्तांत जानने की इच्छा हुई। तब कृष्ण ने जरासंध के बारे में बताया।
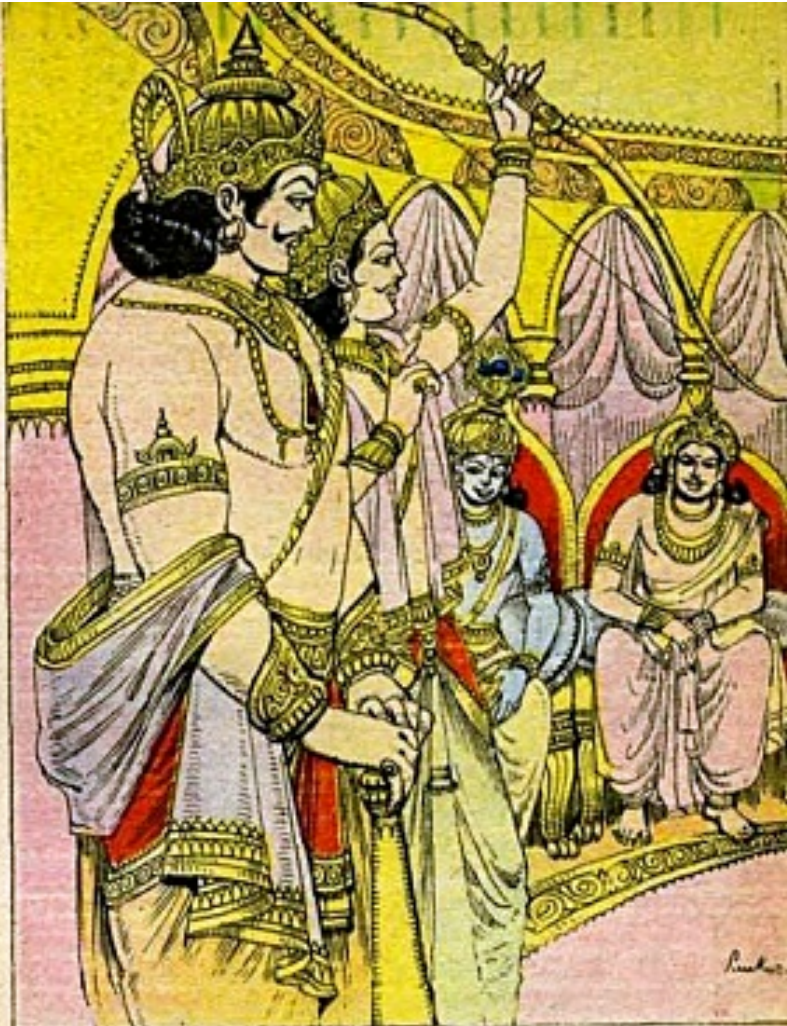
''बृहद्रथ नामक एक राजा मगध का शासक था। वह इंद्र के समान था। उसके पास तीन अक्षौहिणी सेनाएँ थीं। काशी की जुड़वीं राजकुमारियों से उसने ब्याह किया। पर बहुत समय तक वह संतानहीन रहा। उसकी पूजाएँ सफल नहीं हो पायीं। संतान की इच्छा लेकर, अपनी पत्नियों समेत वह तपस्या करने निकल पड़ा।

वन में आम के एक पेड़ के नीचे चंद्रकौशिक नामक तपस्वी से बृहद्रथ की भेंट हुई। वह उच्च कोटि का तपस्वी था। गौतम वंश का था। बृहद्रथ ने उस तपस्वी की पूर्ण निष्ठा से सेवा - शुश्रूषा की।

एक दिन चंद्रकौशिक ने उससे कहा

"पुत्र, दीर्घ काल से तुम मेरी सेवाओं में रत हो। मैं तुम्हारी सेवाओं से बहुत ही तृप्त हूँ। बोलो, तुम्हें क्या चाहिये?"

"स्वामी, मैंने बहुत कुछ किया, पर मेरी संतान नहीं हुई। संतान पाने की मेरी इचछा पूरी नहीं हुई। मैं विरक्त हो गया, और तपस्या करने यहाँ चला आया। अब मेरी इच्छाएँ और क्या हो सकती हैं?" बृहद्रथ ने कहा।

उसी क्षण एक पका आम चंद्रकौशिक की गोद में आ गिरा। उस फल को बृहद्रध को देते हुए उस तपस्वी ने कहा "राजन्, तुम्हारे पुत्र अवश्य होंगे। तुम अब अपना राज्य लौट जाओ।"

बृहद्रध उस फल को लेकर अपनी दोनों पत्नियों समेत नगर लौटा। वह दोनों पत्नियों को एकसमान चाहता था, इसलिए उस फल के उसने दो भाग किये और दोनों को दे दिया। फलस्वरूप दोनों एक ही समय गर्भवती हो गयीं।

कालक्रमानुसार उनके अलग-अलग बच्चे भी हुए। किन्तु हर एक शिशु अर्ध शरीरधारी था। एक आँख, एक नाक, एक हाथ, एक पाँव, आधा मुख, आधा पेट था सबका। इन विकृत शिशुओं को देखकर रानियाँ ड़र गयीं। वे रोने-धोने लगीं। तब दाइयों ने उन शिशुओं को ले जाकर नगर के कूडे-करकट के ढ़ेर में ड़ाल दिया।

उस प्रांत में जरा नामक एक राक्षसी रहा करती थी। वह इन अर्ध शिशुओं को ले जाने के लिए आयी। अनजाने में उसने दो शरीरों को एक साथ उठा लिया। तुरंत ही दोनों भाग एक हो गये और पूर्ण शिशु का रूप धारण किया। वह ज़ोर से रोने लगा। उसकी रुलाई सुनकर अंतःपुर से रानियाँ और राजा दौड़े आये।

जरा ने जान लिया कि यह शिशु राजवंश का है। तब उसने मानव-रूप धारण करके, उस बच्चे को राजा को देते हुए बताया कि ऐसा कैसे हुआ? दोनों रानियाँ बहुत ही खुश हुई वे उसे ले गयीं और दूध पिलाकर पालने लगीं।

बृहद्रथ ने अपने पुत्र का नाम जरासंध रखा । उसने घोषणा की कि उसके जन्मोत्सव पर हर वर्ष उत्सव मनाया जाए । जरासंध बड़ा हुआ । अतुल्य शूर-वीर कहलाया गया । उसने कितने ही राजाओं के छक्के छुड़ा दिये और युद्ध में उनपर विजय पायी ।

जब जरासंध ने सुना कि कृष्ण ने कंस को मारा है, तो उसने मथुरा पर आक्रमण किया क्योंकि कंस की पत्नियाँ जरासंध की पुत्रियाँ थीं ।

कृष्ण ने धर्मराज से कहा "राजन्, जरासंध किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से नहीं मारा जा सकता । पर, भीम उसे मल्लयुद्ध में आसानी से मार सकता है । मेरी बात का तुम्हें विश्वास है तो भीम और अर्जुन को मेरे साथ भेजो ।"

"वाह कृष्ण, तुमने ठीक बात की । तुम्हारे सिवा हमारा आधार ही कौन है? तुमने जरासंध को मारने का निर्णय ले लिया तो समझो, वह मर ही गया । तुम्हारा संकल्प हो तो मेरा राजसूय-यज्ञ भी निर्विघ्न पूर्ण होगा । तुम साथ हो, तो कौन-सा ऐसा कार्य है, जो भीम और अर्जुन नहीं कर सकते । तुम तीनों निकलो और विजय प्राप्त करके सकुशल लौटो ।" धर्मराज ने कहा ।

कृष्ण भीम और अर्जुन ब्राह्मणों का वेष धारण करके इंद्रप्रस्थ से निकले । पद्मसरोवर, कालकूट, गंडकिसि, महाशोण
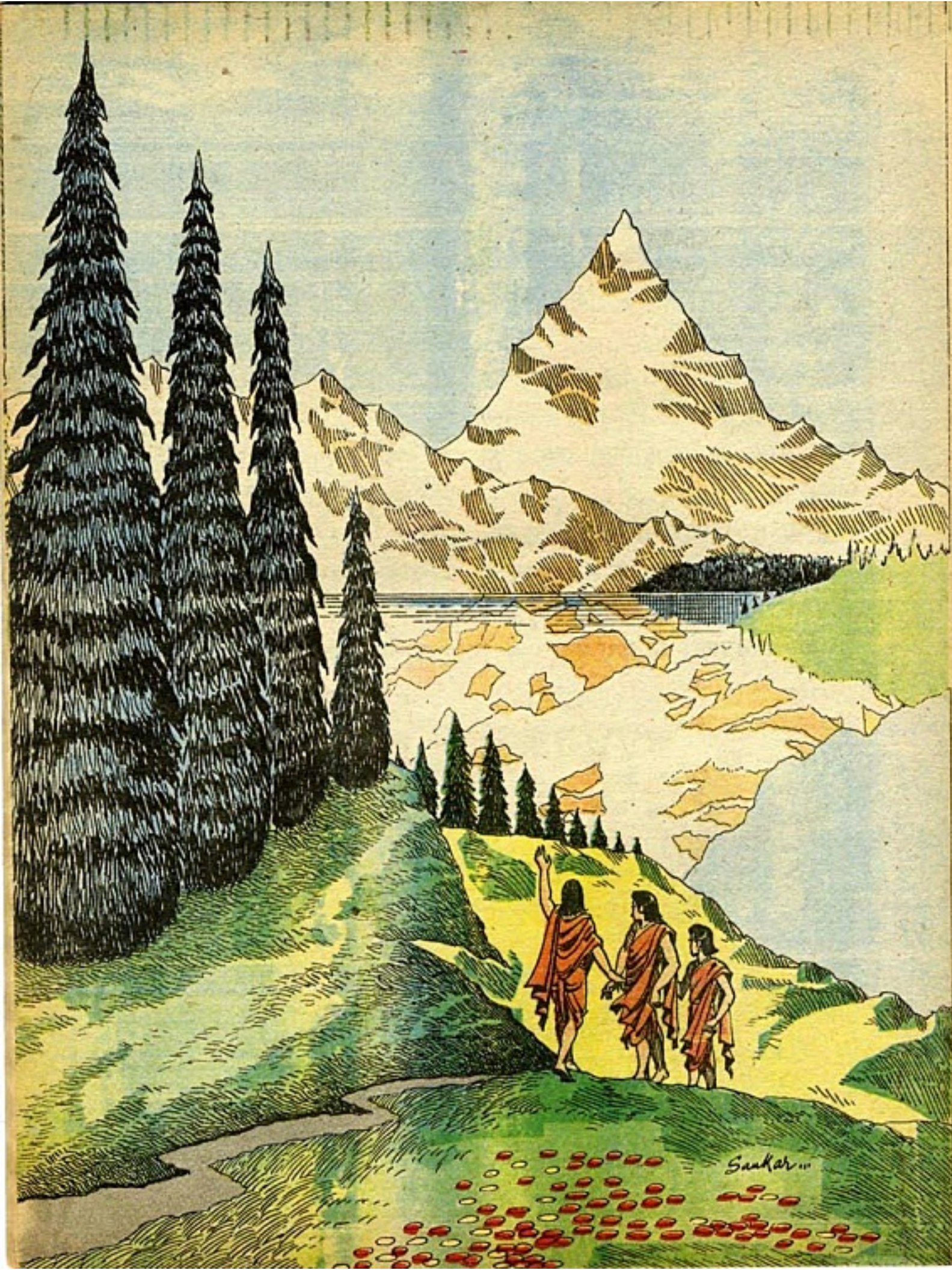
Sankar

को पार करके पूर्वकोसल, मिथिला नगर से होते हुए पूर्वी दिशा में यात्रा की। मगध देश पहुँचने पर गोरधगिरि पर चढ़कर उन्होंने राजधानी देखी। वह बहुत ही संपन्न नगर था। जहाँ देखो, वहाँ उन्हें जलसमृद्धि व पशुसमृद्धि दिखायी पड़ीं। नगर के चारों ओर क़िलों की तरह पाँच पहाड़ थे। इसी कारण उसका नाम पड़ा - गिरिव्रज।

गिरिव्रज के चारों ओरों के पर्वतों में से चैत्यका नामक पर्वत पर तीन भेरियाँ थीं। कोई विदेशी नगर में प्रवेश कर रहे हों तो ये भेरियाँ आप ही आप बजने लगती हैं। इसलिए कृष्ण, भीमार्जुन पहले उस पर्वत पर गये और उन भेरियों को फोड़ डाला। परंतु उस प्रांत के नगरद्वार पर सशस्त्र सैनिक तैनात थे। अतः उन्होंने उस तरफ़ से नगर में प्रवेश नहीं किया। वे चैत्यका शिखर पर चढ़े, नगर के प्राकार को पार किया और नगर में प्रवेश किया।

उस समय तक जरासंध को लगा कि उसका बुरा होनेवाला है। इसलिए वह स्नान करके शांति के लिए पूजा में संलग्न हो गया। इतने में कृष्ण, भीम और अर्जुन पुष्प-मालाएँ बनानेवाले के पास गये। उनसे ज़बरदस्ती मालाएँ छीनीं और उन्हें पहन लिया। शरीर भर में चंदन पोत लिया और ब्राह्मणों के वेष में जरासंध के यहाँ गये।

उन्हें सचमुच ब्राह्मण समझकर जरासंध ने उनकी आवभगत की और उनका स्वागत-सत्कार करना चाहा। किन्तु उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। बस, मौन रहे।

केवल कृष्ण ने भीम व अर्जुन को दिखाकर जरासंध से इतना ही कहा "राजा, इन दोनों ने मौन-व्रत धारण किया है। आधी रात के बाद ही वे तुमसे बातें करेंगे।"

"तो ठीक है, आधी रात के बाद ही मैं इनका सत्कार करूँगा" कहते हुए जरासंध ने उन तीनों को यज्ञशाला में भेज दिया।

- सशेष

बालक - समाचारों में

जन्म-दिन पर भेंट

यह तो साधारण बात है कि बच्चों को उनके जन्म-दिन पर भेंटें दी जाती हैं। ये भेंटें उनके दोस्त या रिश्तेदार देते हैं। इन भेंटों को स्वीकार करनेवालों को उन्हें देखकर कभी-कभी हर्ष व आश्चर्य होता है। केरल के, कण्णनूर जिले के तालिपरंबा के प्रवीण नामक पंद्रह साल के लड़के को अपने जन्म दिन पर प्राप्त भेंट पर ऐसा ही हर्ष व आश्चर्य हुआ। जानते हैं, यह भेंट क्या थी? उसी लड़के की रची कविताओं का संग्रह। प्रवीण को मालूम था कि उसकी कविताएँ प्रकाशित होनेवाली हैं, किन्तु वह जानता नहीं था कि इतनी कम अवधि में वे प्रकाशित होंगीं। बच्चे कथाएँ, कविताएँ लिखते रहते हैं और उन्हें पत्रिकाओं में छापने के लिए भेजा करते हैं, जो सर्वसाधारण बात है। किन्तु बच्चों की कविताओं का पुस्तक के रूप में छपना बहुत कम होता है। स्थानीय केंद्र-विद्यालय में दसवीं कक्षा में पढ़ता हुआ प्रवीण हिन्दी और संस्कृत में भी कविताएँ रचता रहता है।

तबला-वादन में सामर्थ्य

आकाशवाणी में गाना हो या वाद्य बजाना हो तो साधारणतया कम से कम सोलह साल का होना चाहिये। फिर भी बारह सालों के दीपक मेहता की प्रतिभा से मुग्ध आकाशवाणी के अधिकारियों ने इस नियम को तोड़ा और उस बालक को बी ग्रेड का स्तर दिया। दीपक ने छे सालों के पहले स्वयं तबला बजाना शुरू किया। बाद वह गुरु के पास भेजा गया। अब उसने तबला बजाने की सारी बारीकियाँ सीखीं। 'नेशनल टालेंट सेर्च स्कालरषिप' पाया। इससे उसके बीसवें साल तक सहायता मिल सकती है। दीपक पर जी.टीवी एक डाक्युमेंटरी भी प्रस्तुत करनेवाला है।

भारतीय बाल मेधावी

ब्राजिल के साबलोरेंको में हाल ही में १०-१४ वर्षों के बीच के बाल-बालिकाओं के लिए 'वरल्ड यूथ चेस फेस्टिवल' संपन्न हुआ। इसमें भारत की तरफ़ से सात बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इनमें से भाग लेनेवाली दिल्ली की टानिया सचदेव नामक बालिका की उम्र है, आठ ही साल। इन स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए 'इंटरनेशनल चेस फेडरेशन' ने उसे प्रत्येक रूप में अनुमति दी। फेडरेशन के अध्यक्ष ने कहा "भारत की इस बाल मेंधावी को अनुमति देते हुए मुझे अपार आनंद हो रहा है।" एशिया फेडरेशन के अध्यक्ष ने उस बालिका की प्रशंसा करते हुए कहा "उसके नैपुण्य के लिए फेडरेशन का दिखाया आदर अति प्रशंसनीय है और ऐसा बहुत कम होता है।"

टुलिप

कहा जाता है कि अफ्रीका के अंगोला से सर्वप्रथम १८७० में टुलिप पेड़ श्रीलंका ले जाया गया। फिर वे हमारे देश में लाये गये। वे अब संसार भर में व्याप्त हैं। हमारे देश के महाराष्ट्र के समुद्री तटवर्ती प्रांतों में ये पेड़ अधिकतर दिखाई देते हैं। उत्तर प्रांत में सदा हरे दिखनेवाले इन पेड़ों से दक्षिणी प्राँतों में गर्मी के दिनों में पत्ते झडते हैं।

इनके पत्ते पक्के हरे रंग में एक-दूसरे के सामने होते हैं। शीतकाल में हरे रंग में सुँदर कोमल कलियाँ इनमें पैदा होती हैं। टहनियों के कोनों में लाल रंग के फूल घंटे के आकार में गुच्छों के गुच्छे होते हैं। सिंतबर से लेकर मई तक इनमें फूल होते हैं। ये पेड़ गर्मी के दिनों में फल देते हैं। फल लंबे और नुकीले होते हैं। इस पेड़ का फैलाव धीरे-धीरे होता है। इसकी लकड़ी मुलायम होती है, इसलिए वह काम में नहीं आती।

इस पेड़ के फूल लाल घंटे के आकार में होते हैं, इसलिए इसे अंग्रेज़ी में 'स्कारलेट बेल' कहते हैं। टुलिप की कलियों को निचोडने से उसमें से पानी छिडकता है। इसलिए इस पेड़ को अंग्रेज़ी में 'फौंटेन ट्री' भी कहते हैं।

वृक्ष-शास्त्र में इसे 'स्पातोडी कांपानुलाटा' कहते हैं। इसका यह नाम भी पड़ा, उसके फूल के घंटे के आकार के कारण ही। ये मुख्यतया अलंकार वृक्ष हैं।

हमारे देश के ऋषि : ११

पराशर

कल्माषपाद नामक राजा शिकार करने जंगल गया। वह रास्ता भूलकर जब पहाड़ के समीप के संकीर्ण मार्ग से जाने लगा तब वसिष्ठ मुनि के पुत्र शक्ति सामने से आ रहे थे। राजा ने उनसे कहा कि रास्ते से हट जाओ और मुझे जाने दो। मुनि ने उत्तर में कहा कि तुम्हीं हटो और मुझे रास्ता दो।

उसकी बातों पर राजा क्रोधित हुआ। उसने बाण से उसे मारा। तब मुनि ने कहा 'तुम मनुष्य की तरह व्यवहार नहीं कर रहे हो। तुमने जंतु की तरह व्यवहार किया। अतः सर्वप्रथम जो जंतु तुम्हें दीखेगा, उसी के लक्षण तुम अपनाओगे।''

राजा ने देखा कि तभी एक बाघ उधर से गुज़र रहा है। दूसरे ही क्षण राजा बाघ की तरह गरजता हुआ आवेश में आकर मुनि पर टूट पडा और उन्हें निगल लिया।

फिर उसने राक्षस का रूप धारण किया और कहीं चला गया। शक्तिमुनि की पत्नी अदृश्यंति गर्भवती थी। किन्तु बारह सालों तक शिशु उत्पन्न नहीं हुआ। साथ ही रहते हुए मुनि पुंगव सुनते आ रहे थे कि अदृश्यंति के गर्भ में ही रहकर शिशु वेद मंत्रों का पठन कर रहा है। बाद, बालक उत्पन्न हुआ। नाम रखा गया, पराशर। कपिल, पुलस्त्यु आदि गुरुओं से उन्होंने शिक्षा पायी।

पराशर को अपनी माँ से ज्ञात हुआ कि उनके बाप को एक राक्षस ने निगल लिया तो समस्त राक्षसों के विनाश के लिए एक यज्ञ प्रारंभ किया। यह जानकर उनके दादा वसिष्ट कुछ और मुनियों को अपने साथ ले आये उन्होंने अपने पोते से यज्ञ रोक देने को कहा परामर्श ने मान तो लिया पर यज्ञ के कुंड मे अग्नि धधक रही थी। उसे ऐसे ही छोड़ना नहीं चाहिये। इसलिए पराशर ने उस अग्नि को निकाला और हिमालय की दिशा में फेंक दी।

हिमालय में कभी-कभी अग्नि प्रज्वलित होती है, जिससे जंगल जल जाते हैं। कहते हैं कि बरफ़ को पिघलाने के लिए पराशर ने जिस यज्ञ की अग्नि फेंकी थी, वही इसका कारण है।
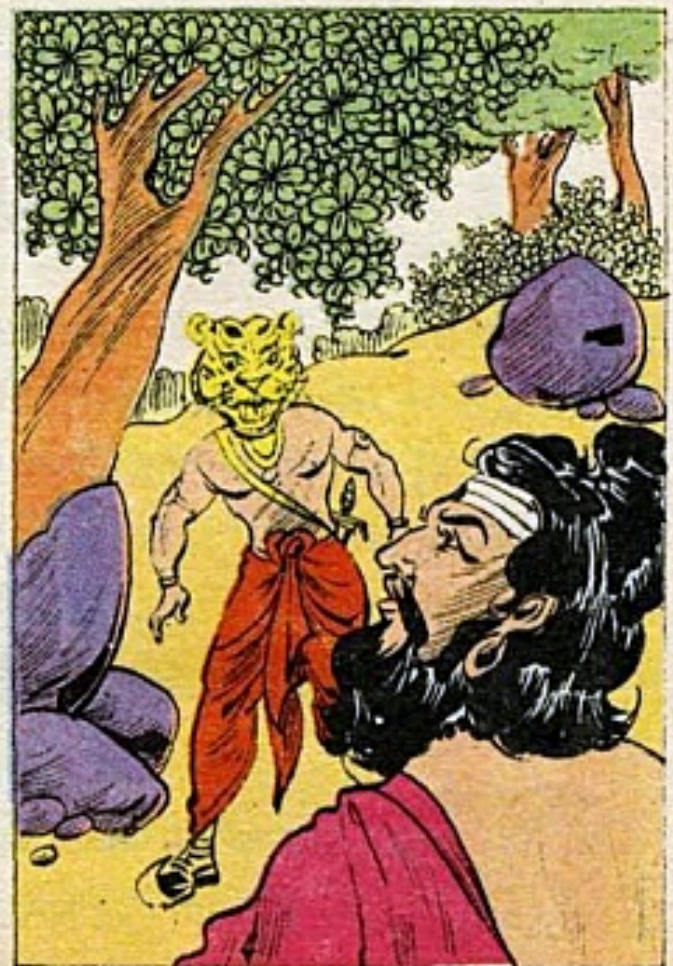
क्या तुम जानते हो ?

१. किस पक्षी को शांति का चिह्न माना जाता है ?
२. ब्रिटेन की सर्वप्रथम महिला प्रधान मंत्री कौन थीं?
३. ग्रहों में से सबसे बड़ा ग्रह कौन-सा है?
४. साँप क्यों आँखें खोलकर ही सोता रहता है?
५. राजस्थान में ही दिखायी देनेवाले साँपों को कौन पक्षी खा जाता है?
६. 'प्रार्थना चक्र' कहाँ है ? उनका उपयोग कौन करते हैं ?
७. जापानवालों से रूपित 'पुष्प अलंकार कला' का क्या नाम है?
८. संसार की सबसे बड़ी लंबी दीवार कौन-सी है?
९. 'ईफिल टवर' कहाँ है?
१०. थर्मामीटर में उपयोग में लाया जानेवाला 'द्रवलोह' क्या है?
११. अमेरीका के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?
१२. टेलिफोन के आविष्कारक कौन थे?
१३. किसे 'रंगों का उत्सव' कहा जाता है?
१४. दुनिया के सब से प्राचीन धर्म का क्या नाम है?
१५. श्रीलंका का पूर्व नाम क्या था?
१६. संसार का सबसे ऊँचा मिनोटर (बुर्ज) क्या था ?
१७. नोबेल पुरस्कार प्राप्त उस महिला का क्या नाम है, जिन्होंने भारत को अपना निवास-स्थल बनाया?
१८. बांडमिंटन खेल कहाँ शुरु हुआ?
१९. गांधीजी ने हाथ से बने कपड़े को उपयोग में लाने के लिए जनता से कहा, उस कपड़े का क्या नाम है?
२०. दिल्ली से प्रवाहित होनेवाली नदी का क्या नाम है?

उत्तर

१. कबूतर
२. मार्गरेट थाचर
३. गुरु ग्रह
४. पलकें नहीं हैं।
५. कंकण पक्षी (बस्टर्ड)
६. टिबेट के बौद्ध
७. इकबेना
८. चीन का महाकुड्य
९. फ्रांस के पारिस नगर में
१०. पारा
११. जार्ज वाषिंगटन
१२. अलेग्जांडर ग्रहंबेल
१३. होली
१४. हिन्दु धर्म
१५. सिलोन
१६. दिल्ली का कुतुबमीनार
१७. मदर थेरेसा
१८. भारत देश में
१९. खादी
२०. यमुना

सास भी अच्छी, बहू भी अच्छी

नागार नामक एक गाँव में गौरव नामक एक आदमी था। उसकी अभी-अभी शादी हुई थी। शादी के सप्ताह के भीतर ही आषाढ़-मास का प्रवेश हुआ। प्रथा है कि सास और बहू व सास और दामाद आषाढ़ मास में एक ही घर के चौखट को पार ना करें। इसलिए गौरव ने अपनी पत्नी को उसके मायके में ही छोड़ दिया और बड़ी बेचैनी से आषाढ़ मास के ख़तम होने का इंतज़ार करने लगा।

जैसे ही आषाढ़ का महीना गया और श्रावण आया, गौरव के पिता ने उसे बुलाया और उससे कहा "स्वयं दक्षिणा लेकर शास्त्रीजी के घर जाओ। तुम्हारी माँ भी तुम्हारे साथ आयेगी। फिर दोनों ससुराल जाओ और अपनी पत्नी को हमारे घर लेकर आओ।"

गौरव की माँ ने एक थाली में एक सेर चावल, दो केले, थोड़ा-सा नमक और इमली रखी। उसे लेकर वह पुरोहित के घर गया। पुरोहित ने उससे पूछकर जान लिया कि वह किस काम पर आया है। मन ही मन उसे इस बात पर चिढ़ हुई कि उसने थाली में कोई दक्षिणा नहीं रखी।

किन्तु अपनी चिढ़ को छिपाते हुए पुरोहित ने कहा "अरे गौरव, तुम्हारी अभी-अभी शादी हुई है। पर क्या करूं? एक आधे घंटे तक अच्छा मुहूर्त नहीं है। तब तक तो मैं पंचांग छूऊँगा ही नहीं। एक काम करना। पिछवाड़े में तुरई की लताएँ ज़मीन पर पड़ी हुई हैं। उन्हें पंदाल के ऊपर चढ़ा देना। आधे घंटे के बाद मैं तुम्हें बताऊँगा कि कौन-सा मुहूर्त अच्छा है।"

गौरव कर भी क्या सकता था। वह पिछवाड़े में गया और ज़मीन पर गिरी लताओ को ऊपर चढ़ाने लगा। उस समय पुरोहित की पत्नी वहाँ पूजा के लिए आवश्यक बरतनों

कृष्ण गोस्वामी

को साफ़ कर रही थी।

उसने गौरव को देखकर कहा "पत्नी को ले आने के बाद ख्याल रखना कि वह तुम्हारी माँ की सेवा करे। मेरी भी बहू है, किन्तु क्या लाभ? तुम्हारे पुरोहित उसे ढूँढ़-ढूँढ़कर ले आये हैं। कहते भी रहते हैं कि तुमने कोई पुण्य किया होगा, इसीलिए ऐसी अच्छी बहू मिली। और वह है, जिसे मेरी परवाह ही नहीं, मुझे तिनके के बराबर मानती है।"

गौरव कुछ कहने ही वाला था कि पुरोहित की बहू वहाँ आयी। वह रसोई के काम में व्यस्त थी, इसलिए उसके हाथ में एक चिमटा था। उसे घुमाती हुई बोली "मेरी सहनशीलता की भी हद हो गयी। यह सोचकर चुप रही कि किसी दिन स्वयं ही सुधर जाओगी, पर तुम तो सुधरने का नाम ही नहीं ले रही हो। इतना भी नहीं जानती कि आदर देना और लेना चाहिये। क्या कहीं घर के आपसी झगड़े दूसरों को बताना उचित है?"

दोनों में कुछ समय तक तू-तू मैं-मैं चलता रहा और फिर दोनों अपने कामों में लग गयीं। उनकी सारी बातें गौरव ध्यान से सुनता रहा। उसे चिंता होने लगी कि कल से शायद अपने घर में भी ऐसा ही दृश्य देखना पड़ेगा।

दूसरे दिन निश्चित मुहूर्त पर अपनी माँ को लेकर गौरव ससुराल पहुँचा। समधिन के घर पर हुए स्वागत से उसकी माँ बहुत खुश हुई। वरलक्ष्मी व्रत की समाप्ति के बाद बहू को लेकर वे लौट पड़े।

गौरव के दिन मज़े से कट रहे थे। उसकी पत्नी घर के कामों में बहुत ही कुशल थी। रसोई भी अच्छी बनाती थी। सास भी अपनी बहू से बेहद खुश थी। सास अपने पति से कहा करती थी "कहते हैं कि योग्य पुत्री हो तो जहाँ बैठो, वहीं बैठकर आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। पर पुत्री तो हमारी अपनी नहीं होती, परायी होती है। भगवान की दया से मुझे नेक बहू मिली है। सगी बेटी की तरह मेरी देखभाल कर रही है।"

नयी बहू को देखने के लिए एक दिन गौरव की माँ की बहन लक्ष्मी रामापुर से आयी। गौरव की माँ ने उससे भी अपनी बहू के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर कहा। बहू ने उसका आदर-सत्कार करके प्रमाणित कर दिया कि वह अपनी सास के द्वारा की गयी प्रशंसा के योग्य है। अपनी दीदी को हर बात पर अपनी बहू पर आधारित देखकर लक्ष्मी पहले की तरह घर में आज़ादी महसूस नहीं कर पायी। इस वजह से गौरव की पत्नी से उसे ईर्ष्या होने लगी।

लौटते समय लक्ष्मी ने अपनी दीदी से कहा "दीदी, तुम्हें देखकर मुझे दया आती है। जीजाजी या तुम्हारे बेटे ने तुम्हारे बारे में सोचना ही छोड़ दिया। सब बहू की भरपूर प्रशंसा करने में लगे हो? समझ लेना, इस घर में तुम्हारा कुछ नहीं चलेगा। राज करेगी तुम्हारी बहू।"

बहन के चले जाने के बाद गौरव की माँ, उसी की बातों को लेकर सोचने लगी। उन्हें भुलाने की उसकी कोशिशें भी बेकार गयीं। वही बातें कानों में गूँजने लगीं।

इस स्थिति में धोने के लिए कपड़े ले जाने धोबिन गौरी उनके घर आयी। गौरव की माँ ने उससे कुछ कहना चाहा तो उसने कहा "घर की बातों को लेकर इस उम्र में क्यों परेशान होती हैं। राम का नाम जपिये और शांति से अपनी बहू के भरोसे रहिये।"

धोबिन की इन बातों से उसे लगा कि जैसे उसके पूरे हक़ छीन लिये गये हैं। इसका उसे बहुत दुख हुआ। धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन आने लगा। उसने घर चलाने का भार अपने हाथों में लेने का निश्चय किया।

इस कारण बहू के हर काम में वह खोट निकालने लगी। इससे सास-बहू में हर बात को लेकर बहस होने लगी। दोनों एक दूसरे पर ताने कसने लगीं। घर का वातावरण अशांत हो गया। दोनों गौरव से एक दूसरे की शिकायत करने लगीं। बेचारा गौरव झंझट में फँस गया। देखते-देखते उसकी खुशी पैरों से फ़िसल गयी।

गौरव से सास-बहू के ये झगड़े नहीं देखे गये, इसलिए खेत की रखवाली का बहाना बनाकर रात और दिन वहीं रहने लगा।

गौरव के पिता ने यह जानकर बेटे से कहा "जब से तुम्हारी मौसी आकर गयी है, तब से तुम्हारी माँ बदल गयी है। मैं उसे सबक़ सिखाऊँगा। मैं जैसा कहूँगा, वैसा करो। नाटक करो कि तुम अपनी पत्नी की ही बातों का विश्वास कर रहे हो। अपनी माँ पर चिल्लाओ। उससे नाराज़ ही रहो।" फिर उसने अपने बेटे को बताया कि उसे क्या-क्या करना चाहिये।

उस दिन जब गौरव खेत से घर लौटा तो उसकी माँ ने बहू के बारे में शिकायत करनी शुरू कर दी तो तुरंत नाराज़ होकर उसने कहा "वह तुम्हें बिठाकर खिला रही है, तुम्हारी सेवा कर रही है और तुम? उसकी हर बात पर उसे गाली दे रही हो। न तो तुम स्वयं सुख से रह रही हो और ना ही किसी को सुख से रहने दे रही हो। तुम्हें हमारा यहाँ रहना अच्छा नहीं लगता हो तो बोलो मैं अपनी पत्नी को लेकर कहीं चला जाऊँगा।

मुझे तुम्हारी जायदाद में कोई हिस्सा भी नहीं चाहिये।''

इससे उसकी माँ एकदम भड़क उठी और दौड़ती हुई पिछवाड़े में आयी, जहाँ उसका पति था। उसने कहा ''सच है, पत्नी आयी तो माँ गयी। माँ गुड़ हो गयी और पत्नी शक्कर।'' उसने बेटे की कही बातें सुनायीं।

गौरव का पिता पत्नी को लेकर बेटे के पास आया और कहा ''देखो, अपनी पत्नी को अपने काबू में रखने की लियाक़त नहीं है तो जाओ, यहाँ से चले जाओ। निकम्मे हो तुम। अपनी माँ के बारे में एक भी बात कहो, तो अच्छा नहीं होगा।''

''यों उसकी बुद्धि को ठिकाने पर लाइये। यह निकम्मा तो भूल ही गया कि आप मेरे ही हैं और सब कुछ मेरा।'' गौरव की माँ ने बहुत खुश होते हुए कहा।

गौरव ने व्यंग्य-भरी मुस्कान भरकर कहा ''तुम्हारा पति तुम्हारे साथ है तो मैं अपनी पत्नी के साथ हूँ। उसकी रक्षा का भार मुझपर है। पिताजी ने तुम्हारी दाद दी तो, इसका यह मतलब नहीं कि वे तुम्हारी खिंची लकीर के फ़कीर हैं। तुम तो चाहती हो कि तुम्हारा पति तुम्हारी ही बातें सुने और मैं अपनी पत्नी की बातें ना सुनूँ। उन्हें कानों में पड़ने ही ना दूँ। पुरुष और स्त्री मिल-जुलकर रहें, तभी परिवार ठीक-ठीक चलता है। इस भ्रम में पड़कर तुम गुमराह हो गयी कि सास होने का तुम्हारा आधिपत्य तुम से छिन गया।''

बेटे की बातें सुनकर माँ को अपनी ग़लती महसूस हुई। उसने उदास होकर कहा ''बेटे, मेरी बहन ने मेरे हृदय में विष घोल दिया था। मुझे लगा कि इस घर में अब मेरा कोई बड़प्पन नहीं रह गया। सब अधिकार मुझसे छीन लिये गये। पर सच कहा जाए तो तुम्हारी पत्नी ने अपनी माँ से भी बढ़कर मेरी देख-भाल की है। सास होने के नाते मुझमें जो अहंकार था, उसने मुझे अंधा बना दिया।''

इस घटना के बाद सास-बहू दोनों मिल-जुलकर सुख से रहने लगीं। सब कहने लगे कि सास-बहू हों तो ऐसी हों। अच्छी सास और अच्छी बहू।

नटखट पिशाचिनियाँ

धनापुर नामक गाँव में रामेश और सोमेश की झोंपड़ियाँ अगल बग़ल में थीं। वे दोनों घने दोस्त थे। उन दोनों की झोंपड़ियों के बीच में एक जामुन का पेड़ था। उन्होंने उस पेड़ के नीचे एक छोटा-सा चबूतरा बनाया। जब-जब समय मिलता वो दोनों उस चबूतरे पर बैठते और गपशप करते थे।

एक दिन दोनों चबूतरे पर बैठे बातों में लगे हुए थे। रामेश ने कहा "सोमेश, किसी दिन हम लखपति बनेंगे और महल बनायेंगे। किन्तु बीच में बिना दीवार के इस पेड़ को ऐसे ही रहने देंगे और इसी तरह बैठकर आपस में गपशप करते रहेंगे।"

"रामेश, ज़रूर ऐसा ही हो। मेरी भी तो यही इच्छा है। पर एक सलाह है। 'ना' नही करना। मिट्टी के इस चबूतरे पर संगमरमर के पथ्थर बिछवाएँगे। इसमें ज़्यादा ख़र्चा भी नहीं होगा। पाँच महीनों में यह काम पूरा हो जायेगा।"

रामेश इसके उत्तर में कुछ कहने ही वाला था कि तभी बाहर सुखाये गये कपड़े ले जाने के लिए उसकी पत्नी वहाँ आयी और कहा "शीशा टूट चुका है। शहर जाकर नया ले आने के लिए दस दिनों से कह रही हूँ। बेकार की बातों में घंटों गुजार देते हो, पर शहर जाने का नाम तक नहीं ले रहे हो।"

"इन्हें बेकार की बातें कहती हो? मालूम नहीं, लक्ष्मी किस क्षण दरवाज़ा खटखटायेगी। हममें बात यही चल रही है कि उस समय हम झोंपड़ी में ही होंगे या और कहीं।" रामेश ने मुस्कुराते हुए कहा। उसी समय सोमेश की पत्नी भी कूड़ा करकट बाहर फेंकने के लिए आयी। उसने अपने पति से कहा "बहुत दिनों से कहती आ रही हूँ कि चूहों को पकड़ने के लिए

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी
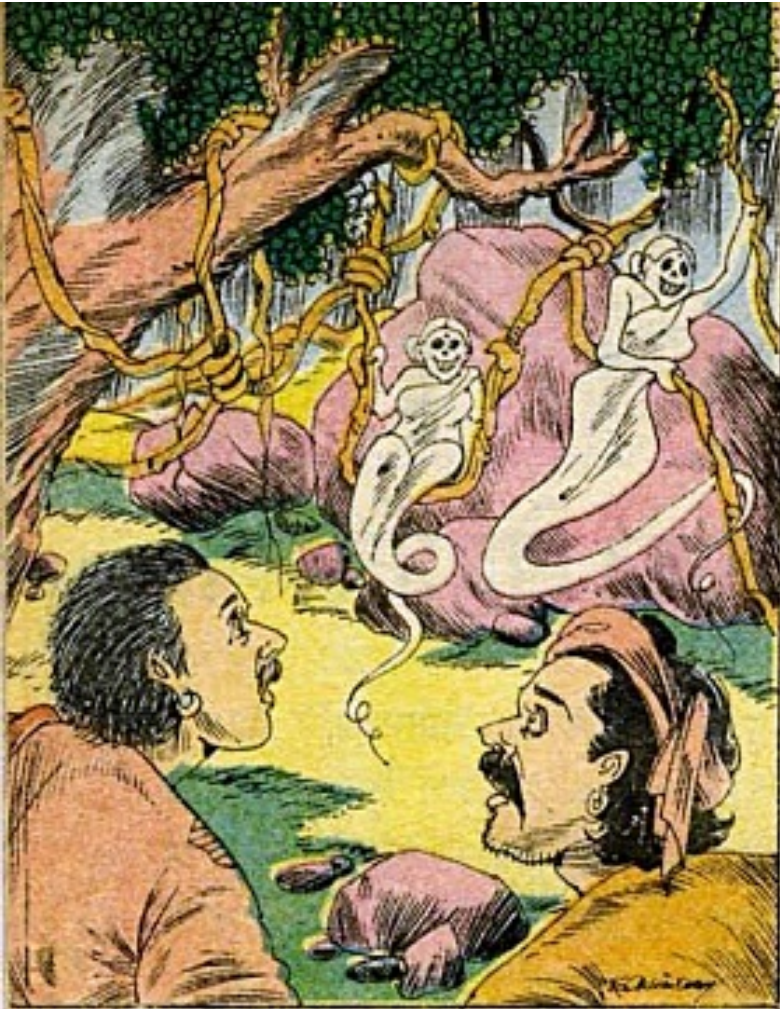
एक चूहादान ले आना । तुम तो मेरी बात अनसुनी करते आ रहे हो ।''

पत्नियों के वहाँ से चले जाने के बाद दोनों शहर निकले । शहर पहुँचने के लिए उन्हें एक छोटे-से जंगल से गुज़रना होगा । वे अंधेरा छा जाने के पहले ही घर लौट आने के लिये जल्दी-जल्दी चलने लगे । पर, जंगल के बीच पहुँचते-पहुँचते अचानक भारी बारिश होने लगी ।

कोई और दूसरा चारा न होने के कारण दोनों बारिश से बचने के लिए इमली के एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये । तब उन्होंने देखा कि कहीं दूर पर बिजली गिरी है । रामेश डर के मारे कांपता हुआ बोला ''शीशे और चूहेदान के चक्कर में हम इस बारिश में फंस गये । सोमेश, क्या हम इस जंगल से बचकर निकल पायेंगे ?''

''ड़रो मत । बारिश थम जाए तो आधी रात तक ही सही, घर लौट पायेंगे । यह तो नाम के लिए जंगल है, पर इसमें न शेर हैं, ना ही बाघ । सोमेश ने कहा''

आधी रात तक बारिश रुक गयी । ठंडी सांस लेते हुए वे घर लौटने लगे । थोड़ी दूर चलने के बाद उन्होंने देखा कि दो पिशाचिनियाँ बरगद की जटाएँ पकड़कर झूला झूल रही थीं और ज़ोर-ज़ोर से हँसती जा रही थीं । उन लोगों ने पिशाचिनियाँ को देखा ।

पिशाचिनियों की नज़र से बचकर वे लौटकर भागने ही वाले थे कि उन्होंने इन्हें देख लिया । उनमें से एक पिशाचिनी नाटी थी तो दूसरी लंबी । पिशाचिनी ने ताली बजाते हुए कहा ''ड़रो मत, पास आओ''।

दोनों दोस्त भय से कांपते हुए पिशाचिनियों के सामने खड़े हो गये । तब लंबी पिशाचिनी ने पूछा ''क्या तुम दोनों की शादी हो गयी?''

रामेश मन ही मन कहने लगा कि यह भी कोई सवाल हुआ । उसने अपने को संभालते हुए कहा ''शादी हुई, इसीलिए तो हम इन कष्टों में फँस गये । पत्नियों के विरुद्ध कुछ कह सकने का साहस न होने के कारण हम शहर निकले थे ।'' उन्होंने

पूरा-पूरा किस्सा बताकर कहा कि उन्हें जंगल से क्यों गुज़रना पड़ा ।

पिशाचिनियों ने पूरी बात सुनने के बाद ज़ोर से हँसते हुए कहा "यह बताओ कि अपनी पत्नियों को चाहते हो या उनसे ड़रते हो?"

रामेश, सोमेश ने कहा कि हम उन्हें चाहते भी हैं और ड़रते भी है । "हमें आप जैसे लोगों की प्रतीक्षा लंबें अर्से से है । जैसे ही घर पहुँचोगे, वही करना होगा, जो हम कहेंगे ।" पिशाचिनियों ने कहा ।

रामेश ने पूछा "ऐसा करने से हमें क्या फ़ायदा होगा ?" दोनों पिशाचिनियों ने आपस में बातें की और कहा "जैसा हम कहेंगी, वैसा ही करो । फिर कल रात को इस समय तक यहाँ पहुँचकर हमें बताना कि तुम दोनों की पत्नियों का व्यवहार कैसा रहा । ऐसा करने पर तुम दोनों को सोने की एक-एक अशर्फ़ी मिलेगी ।"

सोने की अशर्फ़ी की बात सुनते ही रामेश और सोमेश खुश होते हुए बोले, "कहो, हमें क्या करना है ।" पिशाचनियों ने उन दोनों को बताया कि उन्हें क्या करना है और कहा भी कि आगे कुछ मत बोलना । जाओ और कल रात को इसी समय तक यहाँ पहुँचना ।

रामेश, सोमेश, पिशाचिनियों की बातों को दुहराते हुए आधी रात के बाद घर

लौटे । दरवाज़ा खोलती हुई रामेश की पत्नी ने पूछा "ख़ाली हाथ लौटे हो? शीशा कहाँ है ?"

रामेश जवाब दिये बिना उसे ज़ोर से हटाते हुए अंदर चला गया ।

"पागल हो गये हो क्या?" कहती हुई उसने दरवाज़ा धड़ाम् से बंद कर दिया ।

उधर सोमेश की पत्नी ने खाली हाथ लौटे अपने पति को देखकर पूछा "चूहादान कहाँ है?" सोमेश जवाब में उसका कंधा ज़ोर से हिलाता हुआ अंदर चला गया । सोमेश की पत्नी उसकी इस हरक़त से निस्तब्ध रह गयी और चिल्ला पड़ी "लगता है तुमपर कोई पिशाचिनी की छाया पड़

रामेश ने कहा ।

"मैं तो कल तक भी ठहर नहीं सकता । सूर्योदय होते-होते मैं करोड़पति बनना चाहता हूँ ।" सोमेश ने जेब में रखी सोने की अशर्फ़ी को छूते हुए कहा ।

उनकी बातों पर खिलखिलाकर हँसती हुई दोनों पिशाचिनियों ने कहा "इच्छाओं का होना ग़लत नहीं है । अपनी इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए कहीं इस जंगल के चंदन की चोरी मत करना । इससे जेल जाने का ख़तरा है । कल अगर एक और सोने की अशर्फ़ी चाहते हो तो हम जैसा कहेंगी, करो और लौटकर हमें बताना कि तुम्हारी पत्नियों का कैसा व्यवहार रहा ।" फिर उन्हें बताया कि कल क्या करना होगा ।

रात को घर लौटते ही रामेश और सोमेश अपनी पत्नियों पर नाराज़ हो उठे और कहा "तुम्हारे चेहरों पर बदनसीबी साफ़ लिखी हुई है । हममें ऐसे तो लाखों कमाने की शक्ति है, परंतु तुम्हारी बदनसीबी की वजह से मुश्किल से पाँच रुपये भी नहीं कमा पाते हैं । अगर तुममें शरम व लज्ञा नामक कुछ भी हो तो अपने-अपने मायके भाग जाओ ।"

उन दोनों की पत्नियाँ उनकी बातों पर चुप रह गयीं । एक शब्द भी मुँह से नहीं निकाला । मौन रह गयीं ।

दूसरे दिन रात को उन्होंने पिशाचिनियों गयी है ।"

दूसरे दिन रात को दोनों दोस्त जंगल में आये । उन्होंने पिशाचिनियों को बताया कि उन्होंने क्या किया और उनकी पत्नियों का क्या व्यवहार रहा ।

उनकी बातें सुनकर दोनों खूब हँसीं और बरगद के कोटर से सोने की दो अशर्फ़ियाँ निकालीं और उन्हें दीं ।

उन्हें लेकर खुशी से लौटते हुए पिशाचिनियों ने उनसे कहा "ठहर जाओ । बुरा मत मानना । हम दोनों बहुत शरारती हैं । और अशर्फ़ियाँ कमाने की चाह क्या नहीं है तुम्हें?" क्यों नहीं? कल इस समय तक लखपति बनने की मेरी इच्छा है"

को यह बात बतायी और कहा "हमने अपनी पत्नियों को घर चले जाने की धमकी दी। फिर भी उन्होंने चुप्पी साधी। उनके इस व्यवहार से हम खुद चकित हैं।"

पिशाचिनियाँ उनकी बातें सुनकर ज़ोर-ज़ोर से हँसना चाहती थी, पर उल्टे वे निराश हुईं। उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा "छी, तुम्हारी पत्नियाँ भी कोई पत्नियाँ हैं? हमारे पतियों ने ऐसा कहा तो हम अपने पिछवाड़ों के कुओं में गिरीं और पिशाचिनियाँ बन गयीं। तुम दोनों की पत्नियाँ तो अव्वल दर्जे की जिद्दी दीखती हैं।"

"जिद्दी नहीं हैं, तुम जैसी बुद्धिहीन भी नहीं हैं" इन बातों को सुनते ही चारों चौंक उठे।

अपने पतियों के बारे में जानने के लिए रामेश और सोमेश की पत्नियाँ वे उनके पीछे-पीछे आयी थीं। अब उन्हें मालूम हो गया था कि उनके इस परिवर्तन का कारण ये शरारती पिशाचिनियाँ हैं।

अपने साथ लायी गयी नीम की डालियों से वे पिशाचिनियों को मारने लगीं। पिशाचिनियाँ रोती-बिलखती बरगद की जटाओं को पकड़कर, पास के पेड़ों पर चढ़ गयीं और वहाँ से कूदकर ग़ायब हो गयीं।

आश्चर्य में डूबे रामेश और सोमेश से उनकी पत्नियों ने कहा "जो किया, काफ़ी है। अब घर चलो।"

रामेश और सोमेश ने जान लिया कि वे भी नीम की डालियों से मारे जाने से बच नहीं सकते इसलिए उन्होंने शांति से अपनी पत्नियों से कहा "ठहर जाओ, लगता है कि पेड़ के कोटर में पिशाचिनियों ने अशर्फ़ियाँ छिपायी हैं।" कहते हुए उन्होंने कोटर को ढूँढ़ा तो उसमें अशर्फ़ियाँ मिलीं।

घर लौटने के बाद दोनों ने अशर्फ़ियाँ आपस में बाँट लीं। फिर उन्होंने छोटे-छोटे पक्के मकान बनवाये।

वहाँ अपनी पूर्व इच्छा के अनुसार पेड़ के तले संगमरमर के पथ्थरों का एक चबूतरा भी बनवाया। अब वो दोनों अपनी पत्नियों के साथ स्नेहपूर्वक रहने लगे।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, मई, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

Tajy Prasad

Aruna Nistala

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० मार्च, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

जनवरी, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **चल दिये सजके मेले में**

दूसरा फोटो : **जो मिला भर लिया झोले में**

प्रेषिका : **रमेश कांबले**

कालेज रोड, वियानगर, ब्रह्मपुरी - पो. चंद्रपुर (जि.), महाराष्ट्र - ४४१ २०६.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA (Hindi) March 1996 Regd. No. M. 5452